नारीवादी आंदोलन के कार्यकर्त्ताओं के लिए शब्दकोश

JASS

अनुवादः

crea

द्वितीय संस्करण 2013

CREA
7 Mathura Road, Jangpura B New Delhi 110014, India
t : 91-11-2437-7707 F : 91-11-2437-7708
www.creaworld.org

Follow us on CREAworld.org OfficialCREA

भूमिका

शब्दों की अहमियत

बहुत से कार्यकर्ता और विद्वान मानने लगे हैं कि स्थानीय–से–वैश्विक स्तर पर होने वाले नागरिक कार्य को लेकर हम आज ''संवाद–वार्तालाप के लिए एक जोखिम की घड़ी'' से गुज़र रहे हैं। ऐसे शब्द, जो कभी समाज में मौलिक बदलाव के दृश्य दिखाते थे, अब मजबूत ताक़तों की भाषा का हिस्सा बन अपने असली राजनैतिक मायने खो रहे हैं। मिसाल के तौर पर, जब विश्व बैंक ''सशक्तिकरण'' या ''सिविल सोसायटी की सहभागिता'' की बात करता है, उसका इशारा किसी और ही दिशा में होता है, जहाँ कार्यकर्ताओं के कल्पित मूल बदलाव के बजाय बहुत मामूली परिवर्तन नज़र आते हों। अब क्योंकि नारीवादी कार्यकर्ता व आंदोलन रचयिता शब्दों की इन्हीं राजनैतिक बारीकियों के सहारे अपने काम को आगे बढ़ा पाते हैं, जैसे (संस्था नाम .org name) में हमने तय किया कि हम अपनी परिभाषाएँ ख़ुद तैयार करें और अपनाएँ।

नारीवादी आंदोलन के कार्यकर्ताओं के लिए इस शब्दकोश का विकास

इस शब्दकोश की परिकल्पना का श्रेय जाता है जैस मीसोअमेरिका को, जहाँ भिन्न सामाजिक आंदोलनों से जुड़ी औरतें और नारीवादी सोच रखने वाले अन्य लोग एक–दूसरे को अपने स्थानीय संदर्भ और कार्यनीतियाँ समझाने का प्रयास कर रहे थे। इस प्रक्रिया के दौरान उन्होंने पाया कि वे सहज रूप से नए शब्द और उक्तियाँ ईजाद कर रहे थे, क्योंकि पुराने अर्थहीन हो चले थे। कोस्टा रीका की नारीवादी लेखक, कार्यकर्ता और वकील आल्डा फाचियो ने इसका पहला प्रारूप, 'डिचियोनारियो फ़ेमिनिस्ता, स्पैनिश में लिखा। उनका उद्देश्य था ''शब्दों को पितृसत्ता की बंद तिजोरी यानी सीमित मानसिकता से आज़ाद करना''। जैसे–जैसे दक्षिण–पूर्वी एशिया व दक्षिण अफ्रीका में जैस का काम बढ़ता गया, यह जल्द ही समझ आने लगा कि हम सभी को ऐसे नए शब्दों की तलाश थी और हम सभी इनका ईजाद कर रहे थे, ताकि हम एकदम सही तरह से अपनी बात रख सकें, चाहे वो सत्ता के उस घेरे की बात हो जिससे जूझते हुए हम अपना काम करते हैं, या फिर औरतों के उन अनगिनत तजुर्बों–तकलीफ़ों के बयान हों जो दमन के ख़िलाफ़ उनके लगातार संघर्ष का नतीजा हैं।

हमने नारीवादी शब्दकोश के अंग्रेज़ी प्रारूप पर काम शुरू किया ताकि जैस के समुदाय के भीतर एक समान भाषा, साझा इतिहास, और लक्ष्यपूर्ण भावना पनप सके। जैसे–जैसे इसमें लोगों का योगदान बढ़ा, हम इस शब्दकोश की संभावनाओं को पहचानने लगे, कि यह किस तरह दुनिया को एक ख़ास नारीवादी दृष्टिकोण से देखने–समझने का ज़रिया बन सकता है – एक ऐसा दृष्टिकोण जो स्थिर नहीं रहता बल्कि उस घूमते आईने जैसा है, जो साफ़–साफ़ देखता है कि कुछ सत्ताधारी लोग और चंद विशेष अधिकार–प्राप्त व्यक्ति किस तरह समाज, अर्थव्यवस्था और राजनीति को अपने अनुसार तोड़ते–मरोड़ते हुए असमानता व अन्याय को बढावा देते हैं।

ज्ञान का निर्माण

ज्ञान के किसी भी अन्य क्षेत्र की तरह ही इस शब्दकोश का विषय वस्तु भी इसे लिखने वालों और इसमें योगदान करने वालों के विविध दृष्टिकोणों, कहीं अलग तो कहीं समान बिन्दुओं को छूती पहचानों, निजी मूल्यों और तजुर्बों की मिली–जुली रचना है। ये शब्द और उनकी परिभाषा जैस के काम में बिलकुल समाये हुए हैं, चाहे वो नारीवादी आंदोलन की संरचना हो, या सत्ता की गतिविधियों के सकारात्मक व नकारात्मक असर का विश्लेषण।

उस नज़र से, यह शब्दकोश न ही पूरी हुई है न ही हरेक विषय को लेकर व्यापक मानी जा सकती है, क्योंकि किसी एक ग्रंथ में औरतों की विविध आवाज़ों को या उनके ज्ञान के हर पहलू को पकड़ कर रख पाना संभव ही नहीं है। इसी तरह, यह परिवर्तनशील भी है, क्योंकि शब्द और उनके अर्थ समय और स्थान के साथ बदलते भी रहते हैं। बल्कि हमारी उम्मीद है कि इस शब्दकोश की आड़ में ताज़ी कल्पना के बीज बोये जाएंगे और नए विकल्प के पौधे उपजेंगे, चर्चा और क्रिया दोनों को नयी दिशाएँ मिलेंगी, ताकि हर क्षेत्र से आने वाली औरतें अपने फ़र्क़ समझने, अपनी समानताएँ पहचानने, और ज़मीनी तौर पर साथ आने की शुरुआत कर सकें।

अपना ज्ञान, इल्म, जानकारी बाँटें!

इस शब्दकोश के विकास में हिस्सा लें। आपके शब्दों का स्वागत है और बेहतर परिभाषाओं का इंतज़ार है। हमें बतायें कि किन अर्थों से आप सहमत हैं और कौनसे आपको नहीं जँचते। वाक्यांश/उक्तियाँ, संदर्भ, मायने, इन सब में जो कमियाँ या ख़ामियाँ रह गयी हों उनकी पहचान और सुधार के लिये हम पाठकों पर निर्भर हैं। हमारा मानना है कि कमियाँ पूरी करने की इन कोशिशों का एक बड़ा फ़ायदा यह होगा कि औरतों के अनुभवों और उनकी ज़िंदगियों को लेकर हमारी जो सामूहिक समझ है वो और गहरी होती जाएगी।

About the second edition

वर्ष 2000 में स्थापित क्रिया, नई दिल्ली में स्थित एक नारीवादी अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार संस्था है। मानव अधिकार आन्दोलनों और समूह के विभिन्न भागीदारों के साथ मिलकर, क्रिया महिलाओं और लड़कियों के अधिकारों को आगे बढ़ाने और सभी लोगों के यौनिक और प्रजनन, स्वास्थ्य स्वतंत्रता और अधिकार पर कार्य करती है। क्रिया राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर सकारात्मक सामाजिक बदलाव के लिए पैरवी करती है और दुनियाभर के सक्रियतावादी और पैरवीकारों को ट्रेनिंग और सीखने के अन्य मौके प्रदान करती है।

क्रिया ने विभिन्न समुदायों के साथ कार्य करते हुए बहुत सारी सफलताओं के साथ–साथ चुनौतियों का भी सामना किया। समुदाय में हिन्दी में कार्य करते समय एक बहुत बड़ी चुनौती भाषा को लेकर आई और अब भी आती है। जब हम अंगरेजी में उपयोग किए जाने वाले शब्दों को हिंदी में अनुवाद कर समुदाय के साथ कार्य करते हैं, तो अर्थ और समझ के बदलने की संभावना हमेशा बनी रहती है। इसके समाधान के लिए अनेक हिन्दी प्रकाशनों का निर्माण और अनुवाद किया गया है, लेकिन अभी भी कुछ कमियाँ नारीवादी आंदोलन में हर रोज़ नए शब्दों का आगमन हो रहा है, और नए अनुभव शामिल हो रहे हैं। आवश्यकता है कि उसे हिंदी में बांटा जाए ताकि हिन्दी में कार्य करने वाले साथी भी साथ चल सकें। इसी कमी को दूर करने के लिए इस शब्दावली का प्रकाशन एक कदम है।

जैस ने फेमिनिस्ट डिक्शनरी के प्रकाशन के जरिये बहुत सारे शब्दों को एक नया अर्थ दिया है। इतने रोचक और मूल्यवान प्रकाशन के लिए उन्हें बहुत बहुत बधाई। जैस के इस प्रकाशन को देखने के बाद ऐसा लगा कि हिंदी में यदि कुछ ऐसा हो तो बहुत ही उपयोगी हो सकता है।

फेमिनिस्ट डिक्शनरी का हिंदी का पहला संस्करण प्रकाशित करते हुए क्रिया को बहुत खुशी हो रही है। इसे प्रकाशित करने का निर्णय क्रिया के लिए बहुत ही रोचक रहा है। समुदाय आधारित कार्य शुरू करने के बाद क्रिया ने नारीवादी नेतृत्व के साथ कार्य करने के साथ–साथ इस पर कार्यशाला का भी आयोजन करना शुरू किया। इसी अनुभव ने ये सीख दी कि भारत में महिला आंदोलन के साथ जुड़कर हिंदी में कार्य करते समय उपयोग की जाने वाली भाषाओं का अर्थ भिन्न लोगों के लिए भिन्न है। जेंडर के अर्थ को लेकर ही भिन्न शब्दों की वजह से असमंजस का वातावरण बन जाता है। समानता जैसे शब्दों का भी अलग अलग आंदोलन में अलग तरह से उपयोग किया जाता है। नारीवाद सिर्फ पुरुष विरोधी विचार हैं या इससे भिन्न कुछ और है इसे बताना हिंदी में बहुत आवश्यक है। रुप्सा मल्लिक (क्रिया) ने इस विचार को यथार्थ में बदलने की बात शुरू की और इस दिशा में कार्य शुरू हो गया। कई शब्दों का अनुवाद करते समय भारत के नारीवादी आंदोलन को ध्यान में रखा गया है। अनुवाद में कोशिश की गई है कि सरल हिंदी का प्रयोग किया जाए ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इसका लाभ उठा सकें। क्रिया की तरफ से शालिनी को भी बहुत बहुत धन्यवाद जिन्होंने नए शब्दों को जोड़ने और उनपर मंथन करने में सहयोग दिया। उनके प्रयास और सहयोग से इस डिक्शनरी को प्रकाशित करना संभव हो पाया। इसे अनुवाद करने में स्मृति नेवतिया ने भरपूर योगदान दिया। स्मृति ने सिर्फ अनुवाद ही नहीं बल्कि हर शब्द पर चर्चा भी की और कोशिश की अर्थों को भारतीय संदर्भ में जोड़ने की। इस प्रकाशन को सहयोग देने के लिए द फाउंडेशन फॉर जस्ट सोसाइटी का बहुत बहुत शुक्रिया।

2000 में स्थापित क्रिया, नई दिल्ली में स्थित एक नारीवादी अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार संस्था है। मानव अधिकार आंदोलनों और समूह के विभिन्न भागीदारों के साथ मिलकर क्रिया महिलाओं और लड़कियों के अधिकार को आगे बढ़ाने और सभी लोगों के यौनिक और प्रजनन, स्वास्थ्य स्वतंत्रता और अधिकार पर कार्य करती है। क्रिया राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर सकारात्मक सामाजिक बदलाव के लिए पैरवी करती है और दुनियाभर के सक्रियतावादी और पैरवीकारों को ट्रेनिंग और सीखने के अन्य मौके प्रदान करती है।

क्रिया की तरफ से जैस को बहुत बहुत शुक्रिया कि उन्होंने इसे हिंदी में प्रकाशित करने की अनुमति दी।

कृपया आप अपने सुझाव अवश्य दें ताकि नए शब्दों को इस शब्दकोश में जोड़ा जा सकें। ये लगातार चलने वाली प्रक्रिया है अतः हम आप सभी के सहयोग की अपेक्षा करते हैं। धन्यवाद!

क्रिया : crea@creaworld.org, visit : www.creaworld.org

आप कैसे योगदान कर सकते हैं?

अपनी टिप्पणी और सुझाव **crea@creaworld.org** पर ईमेल करें, या वेबसाइट पर जायें **www.creaworld.org** अथवा

शब्दकोश का आयोजन

इस शब्दकोश को छः ऐसे हिस्सों में बाँटा गया जो नारीवादी आंदोलन के निर्माण में नींव डालने के काम में सहायक हों, सैद्धांतिक रूप से भी और व्यावहारिक तौर पर भी।

1. **नारीवाद (अनेक)** – सामाजिक और राजनैतिक धारणाएँ और विचार
2. **पहचान और फ़र्क** – वो ईंट–पत्थर जिनसे हम बने हैं
3. **सत्ता और ज्ञान** – सत्ता का विश्लेषण व नारीवादी ज्ञान का निर्माण
4. **राज्य** – संस्थान, नागरिकता की प्रथाएँ, लोकतंत्र, और शासन प्रणाली
5. **अर्थव्यवस्था** – मौजूदा वैश्विक अर्थव्यवस्था की इकाईयों और जोड़ों को समझना
6. **नारीवादी आंदोलन की संरचना** – प्रयोजन और नेतृत्व, इन्साफ़ और बराबरी वाली एक बेहतर दुनिया के लिए

INDEX OF ENTRIES

A
ableism 8
activist (for justice) 11
advocacy 11
ageism 8
agency 12
androcentrism 4

B
biological sex 8

C
capitalism 17
care economy 17
citizen and citizenship 12
civil society 15
class 8
classism 8
coalitions12
commons 18
community organizing 12
constituency building 12
consumerism 18
critical consciousness 12
culture 8

D
democracy 12
deregulation 18
development 15
dichotomy 8
disability 8
discourse 4
diversity 8
domestic work 18
domestic worker 18

E
economic democracy 19
empowerment 13
engendered citizenship 13
equality 4
equity 4
ethnicity 9
extractive industries 19

F
family 15
femicide 4
feminism 5
feminist epistemology 10
feminist leadership 13
feminist movement-building 14
feminist movements 14
feminist popular education 13
feminist transgression 13
free-market or market economies 19
free trade 19
fundamentalisms 15

G
gender-based violence (GBV) 5
gender identity 9
gender 5
geographic location 9
globalization 19
governance 16

H
hegemony 10
heterosexism 9
human rights 16
human security 16

I
identity politics 9
ideology 11
informal economy 19
informal labor 20
intention/intentionality 13
international financial institutions (IFIs) 20
intersectionality 9

L
livelihood 20

M
market 20
militarism 16
misogyny 7
mobilize13
movement-building 14
movement 13

N
neo-liberalism 16
NGO-ization 14
NGO non-governmental organization 14

O
oppression 11
organizing 14
othering 9
outreach (for organizing) 14

P
paradigm 11
participation 14
patriarchy 7
political 7
politics 11
post-colonialism 7
post-modernism 7
power 11
privatization 20
privilege 9

Q
queer 9

R
race 10
racism 10
reproductive tax 20
resistance 14
resonance 15
rights 17

S
safe space (for feminist organizing) 15
security 17
sexism 7
sexuality 7
sexual orientation 10
social exclusion 10
social protection 20
socio-economic status 10
solidarity economy 20
state 17

T
transgender person10
transsexual 10

W
wellbeing 15
women's human rights 17

INDEX OF ENTRIES

अ
अलगावी बर्ताव 10
आधिपत्य 12
आंदोलन 14
आंदोलन–निर्माण/आंदोलन की संरचना 15
अधिकार; हक 18
औरतों के मानवाधिकार
अविनियमन 19
आर्थिक लोकतंत्र 20
अनौपचारिक अर्थव्यवस्था 20
अनौपचारिक मज़दूरी/काम 21
अंतरराष्ट्रीय वित्त संस्थान 21

इ
इंटरसेक्शनालिटी; अंतरस्तरीयता 10
इरादा/इरादे के साथ 14

उ
उत्तर उपनिवेशवाद 8
उत्तर आधुनिकता 8
उम्रवाद; उम्र के आधार पर भेदभाव 9
उत्पन्न की हुई 14
उपभोक्तावाद 19

ए
एन जी ओ–करण 15
एकजुटता वाली अर्थव्यवस्था 22

क
क्वीयर 11
कार्यकर्ता (इन्साफ़ के लिए) 12
कुशल–कल्याण 16
कट्टरवाद 16

घ
घरेलू कामकाजी/मज़दूर 20

ज
जेन्डर 6
जेन्डर–आधारित हिंसा 6
जीव–विज्ञान के अनुसार लिंग/सेक्स 9
जुटाना; जुटाव 14
जन–संसाधन 19
जीविका; रोज़गार 21
जाति 17
जाति प्रथा 17
जेन्डर पहचान 10

ट
ट्रांसजेन्डर व्यक्ति/ट्रांस' व्यक्ति 11

त

द
देखरेख वाली अर्थव्यवस्था 19
द्विभाजन 9
दमन 12

न
नारीवाद 6
नस्ल 11
नस्लवाद 11
नारीवादी ज्ञानशास्त्र 11
निर्णय की शक्ति 13
नागरिक और नागरिकता 13
नारीवादी नेतृत्व 14
नारीवादी ढंग का सीमा–उल्लंघन 14
नारीवादी आंदोलन 15
नारीवादी आंदोलन–निर्माण 15
नव–उदार(ता)वाद 18
निकालने–निचोड़ने वाले उद्योग 20
निजीकरण 21

प
पुरुषकेंद्रीयता 5
पितृसत्ता 8
प्रजातीयता 10
पहचान की राजनीति 10
पैरवी 12
प्रचलित नारीवादी शिक्षा 14
प्रतिरोध 15
प्रतिध्वनि 16
परिवार 16
पूँजीवाद 19
प्रजनन टॅक्स 22
प्रशासन 17

ब
बाज़ार 21

भ
भाषा का दायरा 5
भौगोलिक स्थान 10

म
मुक्त बाज़ार या बाज़ार अर्थव्यवस्थाएँ 20
मानव अधिकार 17
मानव सुरक्षा 17

य
यौनिकता 8
यौन रुझान 11

र
राजनैतिक 8
राजनीति 12
राज्य 18

ल
लिंग के आधार पर भेदभाव 8
लोकतंत्र 13

व
वर्ग 9
वर्गवाद 9
विकलांगता; असमर्थता 9
विविधता 10
विषमलैंगिकता के बल पर भेदभाव 10
विशेष अधिकार/सुविधाएँ 11
विचारधारा; विचार–पद्धति; 12
विकास 16
वैश्वीकरण 21

स
समानता 5
साम्य 5
स्त्रीहत्या; 5
स्त्री–द्वेष 8
सामर्थ्यवाद; विकलांग या असमर्थ लोगों के साथ भेदभाव 9
सिसजेन्डर व्यक्ति 9
सामाजिक बहिष्कार 11
सामाजिक–आर्थिक दर्जा 11
सोच का नक़्शा; प्रतिमान 12
सत्ता; ताक़त 12
सम्मिलन, गठबंधन और नेटवर्क 13
सामुदायिक संगठन–कार्य 13
समीक्षात्मक/विवेचनात्मक चेतना 13
संघटक समाज तैयार करना 13
संघटन–कार्य 15
सहभागिता; हिस्सेदारी 15
सुरक्षित स्थान 16
सिविल सोसायटी; नागरिक समाज 16
सैन्यवाद 18
सुरक्षा 18
सामाजिक सुरक्षा 22
सशक्तिकरण 13
संस्कृति 9

ह
होमोफ़ोबिआ 10

नारीवाद (अनेक)

androcentrism पुरुषकेंद्रीयता: जेंडर के आधार पर भेदभाव का वह पहलू, जो पुरुष को ही इंसान का स्वरुप मानता है और पुरुष के नजरिये को सारी मानवता का नजरिया भी और सच तक पहुँचने का निष्पक्ष माध्यम भी। इसके अनुसार मर्दों की जीवन–कथाओं में और पुरुषत्व में ही मानवता का पूरा इतिहास और सारे तजुर्बे समाये हुए हैं, जबकि औरतों की ज़िन्दगी व नारीत्व "अन्य" हैं।

discourse भाषा का दायरा: इसकी एक मूल परिभाषा है वह भाषा–शब्दावली जो किसी विशेष क्षेत्र या विषय से जुड़ी हो या फिर विकसित हो रही हो, जैसे चिकित्सा–संबंधी भाषा का दायरा, या कानूनी भाषा का दायरा। "ज्ञान" के उद्गम और फैलाव पर विचार करते–करते फ्रांसीसी दर्शनशास्त्री मिशेल फूको को ख़याल आया कि ज्ञान निर्मित होता है, यानी हम दुनिया के बारे में जो भी जानते–समझते हैं वह कोई "प्राकृतिक वस्तु–क्रम" नहीं है, बल्कि किसी भी समाज में सत्ता को लेकर चल रही गतिविधियाँ और उस वक़्त की प्रमुख मान्यताएँ इसे तराशती हैं। इसी धारणा को आगे बढ़ाते हुए क्रिस वीडन व जूडिथ बटलर जैसे नारीवादी विचारकों का निवेदन है कि "औरतों का काम" या इतिहास में औरतों की भूमिका को लेकर हमारा ज्ञान तटस्थ न होकर समाज के प्रमुख मूल्यों और रवैयों को दर्शाता है, जैसे वर्ण, प्रजाति, वर्ग, जेन्डर से जुड़ी मान्यताएँ। जहाँ "पारम्परिक" ज्ञान पुरुष–प्रधान समाजों की सेवा में निर्मित होता रहा है, वहीं नारीवादी कार्यकर्ता भी ज्ञान का निर्माण कर सकते हैं और करते हैं, अपने जिये हुए अनुभवों के ज़रिये, और क्योंकि इस तरह निर्मित ज्ञान समाज में सत्ता की असमता को पहचानता है, वह भाषा के दायरे को औरतों के लिए समानता के पक्ष में तानता है।

equality समानता: न्याय–व्यवस्था में संजोयी हुई इस धारणा का संकेत है राजनीति में समान प्रतिनिधित्व, जिसे मापा जा सके, और समान दर्जा, अधिकार व अवसर की ओर। जेन्डर में समानता का यह अर्थ नहीं कि औरत और आदमी एक जैसे हैं, बल्कि यह कि समाज में उनका मूल्य बराबर हो, उन्हें बराबर के अधिकार मिलें और उनके साथ बराबरी का बर्ताव हो।

equity साम्य: न्याय या निष्पक्षता। सबके लिए समान अवसर माँगने वाली राजनैतिक या सामाजिक कोशिशें अक्सर इस बात को नज़रंदाज़ कर जाती हैं कि कुछ लोग जो ज़्यादा ताक़तवर होते हैं वे समाज में फैले भेदभाव का और अपने विशेष अधिकारों का इस्तेमाल करके ऐसे अवसरों का फ़ायदा उठाने की बेहतर गुंजाईश रखते हैं। विकास और अन्य क्षेत्रों में औरतों ने इसीलिए जेन्डर में साम्य पर ज़ोर दिया है, क्योंकि साम्य की धारणा लोगों के बीच मौजूद ऐसे फ़र्क और ज़मीनी स्तर पर असमानता का ख़याल करते हुए, किसी भी कार्य या मुहिम के नतीजों पर ग़ौर करता है।

femicide स्त्रीहत्या; स्त्रीघात औरतों की नियमित रूप से हत्या किया जाना, क्योंकि वे औरतें हैं। पहले तो किसी भी स्त्री की हत्या के संदर्भ में इसका प्रयोग होता था, पर समय के साथ इसका अर्थ बदला है, और ख़ासकर नारीवादी लेखक डायऍन रस्सल के काम के चलते आज यह किसी के स्त्री होने भर के कारण उसकी हत्या की जाने का सूचक है। निशाना बनाये जाने वाले व्यक्ति का जेन्डर ही इस अपराध का एकमात्र प्रेरक होता है।

समानता बनाम साम्य

काफ़ी समय से वैश्विक नारीवादी आंदोलन एक अंदरुनी सवाल से जूझ रहा है, कि क्या हमें "समानता" ("इक्वॉलिटी") की बात करनी चाहिए या "साम्य" ("इक्विटी") की, या फिर दोनों की?

मानवाधिकार की दृष्टि से "समानता" की धारणा ज़रूरी है, क्योंकि सभी अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार समझौतों में इसका उल्लेख है, जैसे कन्वेंशन ऑन दी एलिमिनेशन ऑफ़ ऑल फोर्म्ज ऑफ डिस्क्रिमिनेशन अगेंस्ट विमेन (सीडॉ) मे। इसके अलावा, "समानता" न सिर्फ़ मापी जा सकती है, इसे हरेक नागरिक को दिलाने के लिए सभी राज्य कर्त्तव्यबद्ध हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण यह है कि समानता का लक्ष्य राज्यों को हर तरह के भेदभाव मिटाने के लिए बाध्य करता है, क्योंकि किसी भी तौर पर भेदभाव का मतलब है कुछ व्यक्तियों को बराबर के अधिकारों से वंचित रखना।

मानवाधिकारों के संदर्भ में समानता का सीधा अर्थ है "परिणामों में समानता"। मसलन, क्योंकि राज्यों का दायित्व है कि राजनीति में औरतों की सम्पूर्ण और समान हिस्सेदारी हो, उनका जिम्मा बनता है कि न सिर्फ़ इसकी राह में आने वाली बाधाएँ दूर करें बल्कि कुछ "विशेष अस्थायी कदम" भी उठाने पड़ सकते हैं जैसे कोटा यानी हिस्सा तय करना या फिर अधिमान्यता यानी प्रत्यक्ष पक्षपात से काम लेना, असमानता के उन जमे हुए ढांचों को हटाने के लिए जो औरतों के साथ भेदभाव करते हुए आदमियों की हिस्सेदारी को प्रोत्साहन देते आये हैं।

इस समझ के अनुसार समानता का मतलब है ठोस या वास्तविक समानता। इसे राज्यों द्वारा अमल में लाये जाना अभी बाकी क्यों न हो, वे इसे स्थापित करने के लिए कानूनी तौर पर बाध्य हैं। बल्कि, वास्तविक समानता तक पहुँचने के लिए राज्यों को आदमी और औरत के लिए, या औरतों के भिन्न समूहों के लिए, अक्सर अलग–अलग कानून और नीतियाँ भी बनानी पड़ती हैं, ताकि औरत और आदमी समान रूप से, समान धरातल पर खड़े होकर अपने मानवाधिकार पा सकें। जैसे,

काम में समान अधिकार पाने के लिए ज़्यादातर औरतों को कुछ अलग कानून और नीतियाँ चाहिए हो सकती हैं जो आदमियों के या सभी औरतों के लिए ज़रूरी न हों। गर्भावस्था में सुरक्षा के ख़ास प्रावधान व प्रसूति छुट्टी के अलावा, प्रजनन से जुड़े कार्यों की प्रमुख ज़िम्मेदारी वाली पूरी अवधि के दौरान ज़्यादातर औरतों को ज़रूरत होती है काम की जगह पर नर्सरी यानी बच्चों की देखभाल की सुविधा की, व ऐसी सहायता की जो उन्हें घरेलू कामकाज से राहत दे जिससे वे श्रम के बाज़ार में समान रूप से आ सकें। मानवाधिकार की दृष्टि से राज्यों को इस बात का ध्यान भी रखना होता है कि सभी औरतें समान नहीं होतीं। उम्र, आर्थिक वर्ग, जाति, वर्ण/नस्ल, प्रजाति, विकलांगता और ऐसे अन्य हालात समाज में अलग–अलग दर्जा और सत्ता प्रदान करते हैं, जिनके चलते ज़रूरतें भी अलग होती हैं। (मुखोपाध्याय 2004)

पश्चिम की उदारवादी परम्परा में "समानता" को राज्यों ने औपचारिक तौर पर समझा है, यानी आदमी और औरत को कानून एक ही नज़र से देखे और एक जैसा बर्ताव करे। इसी

feminism नारीवाद: इसमें सम्मिलित हैं विभिन्न सिद्धांत और राजनैतिक कार्यसूचियाँ जिनका उद्देश्य है औरतों के ख़िलाफ़ होने वाले हर तरह के भेदभाव को मिटाना, चाहे उस भेदभाव का आधार सेक्स हो या जेन्डर, वर्ग या वर्ण, प्रजाति, सामर्थ्य, यौनिकता, भौगोलिक स्थान अथवा राष्ट्रीयता, या किसी ही अन्य प्रकार से सामाजिक बहिष्कार। राजनैतिक उद्देश्य के रूप में नारीवाद सदियों से पनपता आया है, और इसपर हर ऐतिहासिक क्षण का अपना असर रहा है। जैसे कि अबोलिशन यानी गुलामी–उन्मूलन आंदोलनों से जुड़े हुए पूर्वकालीन नारीवादी कार्यकर्ताओं को (17वीं और 18वीं सदी में) गुलामी की प्रथा और औरतों की बंधुआ परिस्थिति के बीच सीधा रिश्ता नज़र आया। 20वीं सदी के उदय होने से अब तक नारीवादी राजनैतिक सोच–संघटन की हर बड़ी उमड़ को नयी ''लहर'' कहा गया, ख़ास तौर से अमरीकी नारीवादियों की परिभाषा में। यूँ पहली लहर ने कानूनी हक़ों पर ज़ोर दिया, जैसे 20वीं सदी के पहले दशकों में वोट कर पाने के हक़ के लिए सफ़्राजेट संघर्ष; नारीवाद की दूसरी लहर में विस्तृत रूप से वैयक्तिक क्षेत्र में औरतों की परतंत्रता पर ग़ौर किया गया, जैसे औरतों पर होने वाली हिंसा, प्रजनन से जुड़े उनके अधिकार, परिवार में उनकी भूमिका के मुद्दे। तीसरी लहर के नारीवाद पर विश्व–भर में हो रहे नारीवादी आंदोलनों के गहरे असर के साथ पोस्ट–स्ट्रक्चरलिस्ट सोच का प्रभाव भी है, जिसके चलते यह समझ बनी है कि एक नहीं बल्कि अनेक किस्म के नारीवाद दुनिया में कार्यशील हैं। सिद्धांतों व कार्यों में इस विविधता को देखते हुए तीसरी लहर उन सभी नारीवादी मुहिमों के लिए स्थान और पहचान की माँग करती है जिन्हें अलग–अलग पीढ़ियों ने, भिन्न प्रजाति–आधारित या यौनिकता–संबंधी समूहों ने, या विशेष वर्ग इत्यादि ने आकार दिया है।

gender जेन्डर: ''पुरुषत्व'' और ''नारीत्व'' को लेकर हर समाज की कुछ ख़ास संकल्पना होती है जिसके साथ जेन्डर–आधारित भूमिका से लेकर शारीरिक आकार तक के कई लक्षण जुड़े होते हैं। जेन्डर के अनुसार किसी व्यक्ति की क्या और कैसी भूमिका होनी चाहिए, इसकी सामाजिक शिक्षा बहुत बचपन से शुरू हो जाती है और फिर जीवन–भर हमारी शिक्षा प्रणाली व मीडिया, परिवार, धर्म, जन नीतियाँ और अन्य सामाजिक संस्थान इसकी पुष्टि करते रहते हैं। ये जेन्डर भूमिकाएँ अलग–अलग सांस्कृतिक संदर्भ में अलग होती हैं, और वक़्त के साथ बदल भी सकती हैं। ''पारम्परिक'' जेन्डर भूमिकाओं का सख़्ती से लागू किये जाने के चलते कितने आदमी, कितनी औरतें, कितने गे, लेस्बियन, ट्रांसजेन्डर व्यक्ति, और भी कितने लोग जिन्हें पुरुषत्व, नारीत्व व यौनिकता के दकियानूसी मापदंड़ों से आपत्ति है, या जिन्होंने इनका विरोध किया है, हिंसा और भेदभाव के निशाने बनाये गए हैं।

(**gender identity** जेन्डर पहचान भी देखें)

gender-based violence जेन्डर–आधारित हिंसा: किसी व्यक्ति के जन्म पर निर्धारित सेक्स या जेन्डर, मौजूदा जेन्डर पहचान, या समाज द्वारा तय पुरुषत्व या नारीत्व के नियमों के पालन–उल्लंघन के आधार पर उसे हिंसा का निशाना बनाना। हिंसा की इस परिभाषा में शामिल हैं शारीरिक, यौनिक, और मानसिक उत्पीड़न; धमकी; जबरदस्ती; व्यक्ति की आज़ादी छीन लेना; आर्थिक रूप से उसे वंचित रखना। सार्वजनिक तौर पर हो या ज़ाती ज़िन्दगी के दायरे में, जेन्डर–आधारित हिंसा कभी भी की जा सकती है, जन्मपूर्व भी, बचपन या यौवन में, प्रजनन के वर्षों में, या बुढ़ापे में (मोरेनो 2005)। इसके अनेक प्रकार होते हैं, जैसे लड़कियों की शिशुहत्या; जल्द व जबरन शादी जैसी नुक़सानदायक पारम्परिक प्रथाएँ; ''इज़्ज़त'' की आड़ में की गयी हत्या; लड़कियों के मैथुन– या यौन–इन्द्रियों का काटना; बच्चों के साथ यौन उत्पीड़न और उनकी ग़ुलामी; इंसानों की सौदागरी; यौन ज़बरदस्ती और दुर्व्यवहार; उपेक्षा; घरेलू हिंसा; और बड़े–बूढ़ों के साथ दुर्व्यवहार। जेन्डर–आधारित हिंसा से सबसे ज़्यादा असर, और ख़तरा, औरतों और लड़कियों को होता है, शायद इसीलिए ''औरतों के प्रति हिंसा'' और ''जेन्डर–आधारित हिंसा'' एक–दूसरे के पर्याय से बन गए हैं। लेकिन लड़के और आदमी भी इसका निशाना बन सकते हैं, सेक्शुअल व जेन्डर अल्पसंख्यक भी, जैसे आदमी के साथ सेक्स करने वाले आदमी और ट्रांसजेन्डर व्यक्ति। जेन्डर–आधारित हिंसा का शिकार कोई भी हो, इसकी जड़ है आदमी और औरत के बीच असमानताओं का पूरा ढाँचा, और इसके हथियार हैं शारीरिक, भावनात्मक, या आर्थिक ताक़त और नियंत्रण का दुरुपयोग। (खान 2011)

संदर्भ में कुछ नारीवादियों ने ''साम्य'' पर ज़ोर दिया है, जो वास्तविक समानता, या असर और परिणामों में समानता से जुड़ा है। इनका तर्क है कि ''समानता'' को ''अवसर की समानता'' भर माना गया है, जो तब तक काफ़ी नहीं होगा जब तक सभी उस मकाम पर पहुँच सकें जहाँ कोई इंसान आगे तो कोई और पीछे न हो। इनका मानना है कि सब अपने हक़ों का समान इस्तेमाल कर सकें यह संभव होगा ''साम्य'' से, जिसके अंतर्गत शायद ज़रूरी हो कि आदमी और औरत के लिए अलग–अलग नियम और नीतियाँ बनायी जाएँ।

औपचारिक राजनैतिक बातचीत के दौरान ''जेन्डर में साम्य'' के प्रयोग की कुछ आलोचना हुई है क्योंकि इसने औरतों के अधिकार कमज़ोर किये हैं और इसमें भेदभाव दूर करने की बात नहीं की गयी है। बेइजिंग प्लॅटफॉर्म फ़ॉर एक्शन की वार्तालाप के दौरान अति–रूढ़िवादी राज्यों की कोशिश थी कि दस्तावेज़ में हर जगह ''समानता'' के बजाय ''साम्य'' का प्रयोग किया जाए। इसके चलते, कोई भी राज्य उचित–अनुचित के अपने मनमाने फ़ैसलों के आधार पर औरतों के प्रति होने वाले भेदभाव के लिए सफ़ाई दे पाता। मसलन, औरतों का जायदाद में हिस्सा पाने से वंचित रखे जाने को इस बूते पर सही ठहराना कि स्थानीय रिवाज के अनुसार आदमी ही परिवार की देख–रेख करते हैं।

इसके अलावा, मानवाधिकार से जुड़े कानून में ''समानता'' की परिभाषा भी साफ़ है और वह इसे लागू करने की ताक़त भी रखता है, जबकि ''साम्य'' के साथ ऐसी कोई शर्त नहीं जुड़ी है जो राज्यों को बाध्य करे कि वे भेदभाव हटायें व औरत–आदमी के बीच वास्तविक समानता लायें। क्योंकि भाषा का एक राजनैतिक पहलू भी होता है, ''समानता'' और ''साम्य'' का एक–दूसरे की जगह इस्तेमाल ख़तरनाक़ सिद्ध हो सकता है क्योंकि एक लम्बे समय से मानवाधिकार के अनेक दस्तावेज़ और समझौते जिन कानूनी रक्षा के धागों से बंधे हुए हैं उनकी गाँठें खुल न जाएँ। (फ़ाचियो और मॉर्गन)

नारीवाद

चेंजिंग देयर वर्ल्डः कॉन्सेप्ट्स एंड प्रॅक्टिसिज ऑफ विमेंस मूवमेंट्स (असोसिएशन ऑफ विमेंस राइट्स इन डिवेलपमेंट (एविड), 2008) की अपनी भूमिका में श्रीलता बाटलीवाला नारीवाद को यूँ परिभाषित करती हैंः

''*... एक विचारधारा होने के अलावा यह एक विश्लेषी ढाँचा भी है* जो '60 व '70 के दशकों के मुक़ाबले आज ज़्यादा व्यापक भी है और पैना भी। पिछले तीन दशकों के सक्रियतावाद, पैरवी व शोध के साथ–साथ भौगोलिक–राजनैतिक स्तर के बदलते वैश्विक संदर्भ से हमें अपनी उपलब्धिओं, असफ़लताओं और भावी चुनौतियों को लेकर बड़ी असरदार नयी समझ और नये अनुभव मिले हैं। इनसे हमें मदद मिली है खुद की, और दुनिया की, पहले से व्यापक रूप से कल्पना कर पाने में, और अपने फ़लसफ़े और कार्यनीति को इस कल्पना के अनुकूल बनाने में। **अब हम न सिर्फ़ जेन्डर समानता के पक्ष में खड़े हैं, बल्कि समाज के उन सभी सत्ता वाले संबंधों में बदलाव के पक्ष में, जो किसी भी समूह को, औरत और आदमी को, उनके जेन्डर, उम्र, यौनिकता, सामर्थ्य, वर्ण, मजहब, राष्ट्र, स्थान, वर्ग, जाति, या प्रजाति के आधार पर उनका दमन या शोषण करते हैं या उन्हें दरकिनार करते हैं।** हम वह सरल–सी समानता नहीं चाहते जो हमें वही सत्ता–सुविधा और विशेष अधिकार दिला दे जो अब तक केवल पुरुषों की जागीर थी, न ही हम उन ताक़तों और क़ाबिलियतों को खो देना चाहते हैं जिन्हें समाज ने ''नारीत्व'' मानकर बस औरतों के नाम किया। हम एक ऐसे बदलाव की खोज में निकले हैं जो एक बिलकुल नयी सामाजिक व्यवस्था के अंदर जेन्डर समानता लाये – जिसमें पुरुष, स्त्री, सभी इंसान, व्यक्तिगत व सामाजिक तौर पर ऐसे समाजों में रहते हों जिनमें सामाजिक और आर्थिक समानता हो, सारे मानवाधिकार हों, जहाँ वे प्रकृति के साथ ताल–मेल का जीवन जी सकें, और जहाँ वे हिंसा, द्वन्द व सैन्यीकरण से आज़ादी पा सकें।

- अन्न के बढ़ते हुए दाम, ऊर्जा पर हद से ज़्यादा लागत, और जलवायु परिवर्तन के डरावने सच ने विश्व–व्यापी संकट पैदा कर रखा है। इस माहौल में **नारीवाद का ज़ोर ऐसी आर्थिक नीतियों पर है जो अन्न स्वराज, नवीकरणीय ऊर्जा, व पर्यावरण–परिवेश की स्वस्थता पर आधारित हों, ताकि हम अपनी पृथ्वी और उसके सभी जीव–जातियों व प्राकृतिक संसाधनों का भविष्य संभाल कर रख सकें।**
- जेन्डर और अन्य क्षेत्रों में वैश्वीकरण और नव–उदारवाद के असाम्यिक असर को देखते हुए, **हम ऐसे आर्थिक बदलाव के पक्ष में भी हैं जिसका उद्देश्य है सामाजिक साम्य और मानव विकास लाना, न कि कोरा आर्थिक विकास।**
- हम ऐसा राजनैतिक रूपांतरण चाहते हैं जो सारे नागरिक हक़ और मानवाधिकारों की पूरी श्रेणी की गारंटी दे। हम माँग करते हैं ऐसी सेक्युलर (धर्म–निरपेक्ष), अनेकवादी और लोकतांत्रिक सरकारों की जो हर नागरिक के लिए पारदर्शी, उत्तरदायी और संवेदनशील बनी रहें।
- युद्ध और टकराव के बढ़ते स्तर, औरत और आदमी दोनों का द्वन्द–संबंधित विस्थापन और दमन, राजनैतिक हथियार के तौर पर औरतों के साथ यौन हिंसा के बढ़ते हादसे, इन सब बातों से चिंतित होकर नारीवादी कार्यकर्ता **हर किस्म की हिंसा के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने के साथ जंग और द्वन्द का सख़्त विरोध करते हैं जो आये दिन औरतों को भी और मर्दों को भी विस्थापित और शोषित कर रहे हैं, उनका अनादर कर रहे हैं और दरिद्रता की ओर धकेल रहे हैं।** इसके विपरीत, हम **अमन और अहिंसा** का साथ देते हैं– और आग्रह करते हैं कि झगड़ों के शांतिपूर्वक समाधान की प्रक्रिया में सबको साथ लिया जाये और सभी की सहभागिता हो।
- हम **व्यक्तिवाद के बजाय जिम्मेवार सह–निर्भरता** में विश्वास रखते हैं, लेकिन यह ज़रूर मानते हैं कि **हर व्यक्ति को अपनी निजी ज़िन्दगी के फ़ैसले खुद करने की आज़ादी है।**
- हम विरोध करते हैं उपभोक्तावाद को दिए जा रहे ग़ैर–ज़िम्मेदार प्रोत्साहन का, जिसके चलते स्त्री और पुरुष दोनों का वस्तुकरण जारी है, और जो पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों को ज़ाया व पर्यावरण को नष्ट कर रहा है।
- **नारीवाद का तात्पर्य किसी पर हावी होने की शक्ति से नहीं, बल्कि हालात बदलने की ताक़त से है। हम सत्ता से जुड़ी कार्य प्रणाली बदलने** के संघर्ष में लगे हैं, खुद अपने ढांचों और आंदोलनों के भीतर भी और समाज के उन सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक संस्थानों के अंदर भी जिनपर हम सवाल उठाते आये हैं।
- नयी पीढ़ी के नेताओं–कर्ताओं को सशक्त बनाकर, अनुभवी और समझदार कार्यकर्ताओं की तरह ही नये आगंतुकों को **सम्मानित स्थान और सक्रिय भूमिका** देकर, हमारी कोशिश है कि **हमारी संस्थानों और आंदोलनों में नयापन और ताज़गी बनी रहे।**
- और आखिर में **हम किसी भी ऐसी विचारधारा और कट्टरवाद के ख़िलाफ़ हैं जो औरतों के समान अधिकारों का विरोध या किसी के भी मानवाधिकारों का हनन करती हो**, आर्थिक या सामाजिक आधार पर, या व्यक्ति के वर्ण, प्रजाति, धर्म, राजनैतिक सोच या यौनिकता से जुड़ी पहचान के आधार पर। (बाटलीवाला 2008)

misogyny स्त्री–द्वेष: औरतों से नफ़रत। यह सेक्सिज़म यानी लिंग के आधार पर भेदभाव की मानसिकता है जो प्रकट होती है औरतों को नीचा दिखाकर, उनकी मानहानि करके, उनपर हिंसा से, और यौनिक तौर पर उनके वस्तुकरण में।

patriarchy पितृसत्ता: इसका सीधा अर्थ है ''पिता का राज''। ऐतिहासिक तौर पर पितृसत्ता उस गहरे बसे पुरुष प्रधानता की ओर संकेत करता है जो सर्वांगी और संस्थागत रूप से संस्कृति, राजनीति, अर्थव्यवस्था और सामाजिक ढांचों व मान्यताओं का पहलू रहा है, जिसे वे लगातार बढ़ावा देते आये हैं। ये व्यवस्थाएँ स्त्री को अधीन बनाकर सारा नियंत्रण और निर्णय पुरुष को सौंप देती हैं, और पुरुषत्व से जुड़ें मूल्यों को आदर्श या मानदंड बनाती हैं।

इतिहास के अलग–अलग दौर में और विभिन्न संस्कृतियों में पितृसत्ता की कई विशेषताएँ रही हैं। नारीवादी लेखों में जिस तरह इस अवधारणा की समझ का (जो मानव विज्ञान में पहले से मौजूद थी) विकास हुआ है, उसके हिसाब से यह कोई अकेली या सरल अवधारणा नहीं, बल्कि इसके विविध मायने होते हैं।

political राजनैतिक: यह सत्ता पर आधारित उन रिश्तों–संबंधों का हवाला देता है जो सारे संगठनों व संस्थानों के भीतर भी, आपस में भी, और सभी व्यक्तियों के बीच मौजूद होते हैं। ''राजनीति'' का इशारा अक्सर सरकारों की, और उन संगठनों की तरफ़ होता है, जो सत्ता में होते हैं या इसके लिए स्पर्धा में लगे होते हैं, और जिनमें प्रायः ऐसे असमान सत्ता–संबंध पाये जाते हैं जिन्हें धन, सामाजिक ओहदा, जेन्डर, पढ़ाई का स्तर वगैरह तय करते हैं। ''जो व्यक्तिगत है वह राजनैतिक है'' वाला नारीवादी दावा इस मान्यता का खुलासा करता है कि परिवारों व निजी रिश्तों की भी अपनी राजनीति होती है क्योंकि सत्ता से जुड़ी गतिविधियाँ हर जगह सक्रिय होती हैं। हालांकि राजनैतिक मामलों के प्रति बहुतों का नकारात्मक रवैया होता है, जैस में हम ''राजनैतिक'' का इस्तेमाल करते हैं ताकि औरतों के सोच और काम में राजनैतिक समझ आ सके। यहाँ ''राजनैतिक'' का मतलब है अलग–अलग तरह के नियंत्रण और दमन के ख़िलाफ़ लड़ने की और उन्हें चुनौती देने की प्रक्रिया, जो फ़र्क़ को भी मद्देनज़र रखते हुए– रुझान में फ़र्क़, मतभेद, अलग ज़रूरतें, भिन्न प्राथमिकताएँ– व्यक्तियों और समूहों को बदलाव के लिए साथ मिलकर काम करने में मदद करे।

post-colonialism उत्तर उपनिवेशवाद: एक सीमित दायरे में देखा जाए, तो उत्तर उपनिवेशवादी सोच भूतपूर्व उपनिवेशों और उनपर राज करने वालों के आपसी संबंधों और सत्ता से जुड़ी गतिविधियों का विश्लेषण करती है। उपनिवेशवादी पद्धति के नारीवादी औरतों की उस असमानता का विश्लेषण करते हैं जो उपनिवेशी शासन और शोषण के संदर्भ में सार्वजनिक, निजी और अन्तरंग क्षेत्रों में पनपी हो। विश्लेषण की इस पद्धति को ज्ञान और तर्क के हर बिंदु के लिए ''पश्चिमी'' विश्लेषण की संकीर्ण श्रेणियों के इस्तेमाल से आपत्ति है। ग़ौर करने लायक बात है कि इस सोच का तात्पर्य यह नहीं कि राजनैतिक और प्रादेशिक प्रधानता के, या एक भीतरी नियंत्रण व्यवस्था के रूप में, उपनिवेशवाद मिट चुका है। इसके वैचारिक अस्त्र, जैसे वर्णभेद, धार्मिक असहिष्णुता, औरतों के प्रजनन पर नियंत्रण, ग़ुलामी की व्यवस्था, लिंग के आधार पर भेदभाव, व सैन्यवाद, अब भी आधुनिक समाजों और संस्कृतियों की रगों में बसे हैं।

post-modernism उत्तर आधुनिकता: सिद्धांतों के इस समूह का मानना है कि कोई निष्पक्ष सत्य नहीं होता, बल्कि हम सच्चाई को सापेक्ष व आत्मगत नज़र से देखते हैं, अपने–अपने रुझान और दृष्टिकोण के मुताबिक। यहाँ धारणाओं और मान्यताओं के निर्माण में भाषा, सत्ता–संबंधों, और उद्देश्यों की भूमिका पर ज़ोर दिया गया है। यह ख़ास तौर पर विश्लेषण में सीधे–नुकीले विभागों के प्रयोग को चुनौती देता है, जैसे पुरुष बनाम स्त्री, विषमलैंगिक बनाम समलैंगिक, गोरा बनाम काला, व साम्राज्य बनाम उपनिवेश। यह पुरुष–प्रधानता से प्रभावित द्विभाजन वाले (यानी काली या सफ़ेद, तुम या तो हमारे साथ हो या हमारे ख़िलाफ़ वाली बाइनरी वाले) सोचने और लिखने के तरीके के विपरीत है। उत्तर आधुनिक सोच के विकास से जुड़े लेखकों और दार्शनिकों में शामिल हैं मार्टिन हाइडेगर और मिशेल फूको के अलावा जूडिथ बटलर, एलेन सिक्ज़ू व लुस्स इरीगारे जैसे नारीवादी विचारक।

sexuality यौनिकता: मानव यौनिकता इंसानों के उन अनुभवों और अभिव्यक्तियों का नाम है, जो सेक्स यानी यौन क्रिया से जुड़े हों। जीव विज्ञान के नज़रिये से यौन व्यवहार में होने वाले हर तरह के संपर्क के अलावा इससे जुड़ी चिकित्सीय बातें भी यौनिकता में शामिल हैं, जैसी शारीरिक व मानसिक मुद्दे। सेक्स व यौनिकता को लेकर हमारे व्यवहार और मान्यताओं पर हमारी सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक और कानूनी व्यवस्था का प्रभाव पड़ता है। यौनिकता हालांकि मानव होने का एक सामान्य और बुनियादी पहलू है, ज़्यादातर समाजों में सेक्स और यौनिकता को लेकर बड़ी पाबंदियाँ होती हैं, और ये नैतिक व धार्मिक स्तर पर वाद–विवाद के विषय बने रहते हैं। औरतों की यौनिकता पर नियंत्रण हर समाज में पितृसत्ता का अहम हिस्सा है, जो तय करता है कि औरत खुद को किस नज़र से देखे, बलात्कार की क्या परिभाषा हो, औरतों को गर्भनिरोध और गर्भपात की सुविधाएँ किस हद तक मिलें।

मशहूर दार्शनिक मिशेल फूको ने ''द हिस्टरी ऑफ सेक्शुएलिटी'' में लिखा कि ''यौनिक मायने'' – यानी अलग–अलग लोग कामुक किसे मानते हैं – समाज और संस्कृति की रचनाएँ होती हैं। वे और अन्य लेखक भी इस बात पर ज़ोर देते हैं कि सेक्स राजनैतिक मामला होता है। यानी शिक्षा, धर्म, मीडिया, स्वास्थ्य जैसे संस्थानों के ज़रिये सत्ताधारी लोग तय करते हैं ''नॉर्मल'' या सामान्य क्या है और क्या नहीं। फूको का सुझाव है कि ''यौनिकता'' पर इस तरह के नियंत्रण से बचने के लिए हम ''बदन और आनंद'' पर ध्यान दें।

sexism लिंग के आधार पर भेदभाव: यह मानना कि आदमी (या पुरुष लिंग के व्यक्ति) केवल अपनी पैदाइशी हालत के बूते पर निहित रूप से औरतों से श्रेष्ठ होते हैं। यही औरतों पर दबाव और दमन का मूलभूत आधार है, जो बहुत से सामाजिक और राजनैतिक ढांचों के द्वारा व्यक्त होता है, जैसे पितृसत्ता। चाहे यह मान्यता हर समय ज़ाहिर न भी हो, सामाजीकरण की प्रक्रिया इसके बीज गहरे में बोती है और तरह–तरह की आस्था, रिवाज, मूल्य व रवैये इसे सींचते हैं। हमारी भाषाएँ, मीडिया, घिसी–पिटी धारणाएँ, धार्मिक विश्वास और शिक्षा प्रणाली तक इसे बढ़ावा देते हैं। यह किसी भी

औरत के सामाजिक ओहदे, वर्ण या प्रजाति, राष्ट्रीयता, यौनिकता, उम्र, सामर्थ्य और अन्य कारकों पर निर्भर करता है कि वह लिंग पर आधारित भेदभाव को किस तरह से महसूस करेगी, और इसीलिए इसे जड़ से मिटाना और भी मुश्किल हो जाता है।

(**patriarchy पितृसत्ता** भी देखें)

पहचान और अंतर

eableism सामर्थ्यवाद: विकलांग या असमर्थ लोगों के साथ भेदभाव और बहिष्कार की व्यापक प्रणाली, जो उन लोगों को दबाती है जिनकी मानसिक या भावनात्मक असमर्थताएँ या शारीरिक विकलांगताएँ हों। स्वास्थ्य, उत्पादकता, सौंदर्य और लोगों के जीवन के मूल्यांकन से जुड़ी गहरी बसी मान्यताएँ साथ मिलकर एक ऐसा माहौल पैदा करती हैं जो अक्सर उनके प्रतिकूल होता है जिनकी शारीरिक, भावनात्मक, ज्ञानात्मक या संवेदक समर्थताएँ उन कसौटियों पर खरी नहीं उतरतीं जो उस वक्त के समाज की परिभाषा में स्वीकृति के लिए ज़रूरी हैं।

(**disability विकलांगता; असमर्थता** भी देखें) (रॉस्चर और मक्लिंटॉक 1997)

ageism उम्रवाद; किसी व्यक्ति या समूह के ख़िलाफ़ उनके उम्र के आधार पर पक्षपात करना; कोई भी ख़याल, रवैय्या, कार्य, मानसिकता या संस्था जो उम्र के आधार पर व्यक्ति या व्यक्तियों का दमन या उनके साथ भेदभाव करे। नारीवादियों के लिए एक बड़ी चुनौती है कि वे ऐसे अनेक–पीढ़ी–सम्मिलित आंदोलन तैयार करें जिनमें हर उम्र के व्यक्ति के ज्ञान और तजुर्बे का संगम हो। एक तरफ़ जहाँ युवा नारीवादियों की आवाज़ें अक्सर अनसुनी रह जाती हैं, तो दूसरी ओर बड़ी उम्र की नारीवादियों को कभी–कभी लगता है जैसे युवा पीढ़ी उनके कड़े संघर्ष से प्राप्त ज्ञान को अप्रासंगिक मानकर उसकी उपेक्षा करती है। नारीवादी ध्यान दिलाते हैं कि औरतों को लेकर हमारी उम्र–संबंधी अनुभूतियों पर उपभोक्ता पूँजीवाद यूँ हावी होता है कि वे पारम्परिक रिवाज और मूल्य उलट जाते हैं जिनके चलते हम बुजुर्ग औरतों का सम्मान करते थे, और हम औरतों की बढ़ती उम्र को लेकर घिसी–पिटी अवधारणाएँ अपना लेते हैं, जिससे बूढ़ा होने का डर हमें घेर लेता है और उम्र छुपाने के क्रीम इत्यादि की खूब बिक्री होती है। (फ़ाचियो 2011)

biological sex जीव–विज्ञान के अनुसार लिंग/सेक्स: यहाँ ज़िक्र है व्यक्ति के शरीर पर मौजूद स्त्री या पुरुष वाले लक्षणों का। (गुडमन और शपीरो 1997)। हालांकि स्त्री– और पुरुष–लिंग या सेक्स की यही समझ आम बनी हुई है, इस पूरी प्रक्रिया पर आज बहुत सारे सवाल उठाये जा रहे हैं। जन्म पर निर्धारित सेक्स और जेन्डर की पुरानी सोच को चुनौती देने वाले मानते हैं कि जेन्डर की ही तरह सेक्स भी अनेक प्रकार के होते हैं, जिनमें शामिल हैं इंटरसेक्स विविधताएँ, और इन्हें सिर्फ़ बच्चे के शरीर की बाहरी बनावट को देखकर नहीं समझा जा सकता।

cisgender person सिसजेन्डर व्यक्ति वे व्यक्ति, जिनकी जेन्डर पहचान जन्म पर निर्धारित उनकी जेन्डर पहचान से मेल खाती है। अतः सिस आदमी जन्म पर पुरुष जेन्डर निर्धारित व्यक्ति है, जो खुद को आदमी ही मानता हो, और सिस औरत जन्म पर स्त्री जेन्डर निर्धारित व्यक्ति है, जो खुद को औरत ही समझती हो। सिसजेन्डर होने से व्यक्ति को वे सभी सिसजेन्डर सुविधाएँ प्राप्त होती हैं, जो ट्रांस' व्यक्ति को उपलब्ध नहीं होतीं, क्योंकि हमारी दुनिया अभी भी जेन्डर की बाइनरी ढांचों में ही फंसी हुई है। (लेबिया 2014, बाइनरी जेन्डर व्यवस्था को तोड़ते हुए)

(**gender identity** जेन्डर पहचान और **transgender person/ trans* person** ट्रांसजेन्डर व्यक्ति ट्रांस' व्यक्ति भी देखें)

class वर्ग: अलग परिभाषाएँ हैं, एक तात्कालिक परिभाषा है "एक तुलनात्मक सामाजिक दर्जा जो आय, धन, वंशावली, शिक्षा–स्तर, ओहदा व/या सत्ता पर आधारित है।" (येस्केल और लियोंडर–राइट 1997)

classism वर्गवाद: लोगों के सामाजिक–आर्थिक वर्ग के अनुसार उनका मूल्यांकन करने वाली संस्थागत, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत प्रथाएँ व मान्यताएँ; और ऐसी आर्थिक व्यवस्था जो बेहद असमानता पैदा करे और बुनियादी मानव ज़रूरतों को पूरा होने से रोके। (येस्केल और लियोंडर–राइट 1997)

culture संस्कृति: सामाजिक माहौल के वे पहलू जो मूल्य प्रदान करते हैं, जैसे भाषा, पहनावा, खान–पान, परम्पराएँ, रीति–रिवाज। राजनैतिक दृष्टि से, संस्कृति एक ऐसा बंधन हो सकता है जो समुदाय की एकजुटता को और मज़बूत बनाये, मिसाल के तौर पर पारम्परिक संस्कृतिओं को वापस प्राप्त करके और हावी हो रही संस्कृतिओं का प्रतिरोध करके, यानी "प्रतिरोधी संस्कृतियाँ" तैयार करके। लेकिन साथ ही, "संस्कृति का सम्मान" एक आम तर्क है जो सामाजिक बदलाव के विरोध में इस्तेमाल किया जाता है, ख़ास तौर से जब बदलाव समानता और न्याय की दिशा में हो। संस्कृति परिवर्तनशील है, इसपर प्रमुख आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक गतिविधियों का असर पड़ता है, और यह संदर्भ के साथ बदलती है, चाहे सौंदर्य के मापदंड की बात हो या परिवार की परिभाषा की। संस्कृति कोई इकलौता या अपरिवर्ती मान्यताओं का ढाँचा नहीं, बल्कि यह बाहरी प्रभावों व समय के साथ बदलती रहती है।

dichotomy द्विभाजन: यानी "दो हिस्सों में काटना"। इसमें किसी इकाई या व्यवस्था के दो ऐसे भाग होते हैं जो परस्पर तौर पर अनन्य और विपरीत हों। यह ऐसा दृष्टिकोण है जो हर चीज को "या यह या वह" के रूप में देखता है, जैसे पुरुष/स्त्री, अच्छा/बुरा, और यूँ दो चीज़ों के अंतर के विश्लेषण से मिलने वाले बारीक–पेचीदे नतीजे पहचानता ही नहीं। नारीवादियों ने सेक्शुअल या लिंग द्विभाजन की बात की है, यानी मानवता का दो लिंग में बाँट दिया जाना, स्त्री और पुरुष, जो अनन्यता पर आधारित हैं और जिनके अनुसार हर इंसान का या तो इस लिंग का होना ज़रूरी है या उस लिंग का। लिंग द्विभाजन एक मिसाल है लिंग के आधार पर भेदभाव की, क्योंकि यह इस सम्भावना तक को नकारता है कि किसी जन्म पर स्त्री निर्धारित व्यक्ति में पुरुषत्व के लक्षण हो सकते हैं या कोई जन्म पर पुरुष निर्धारित व्यक्ति में स्त्रीत्व के गुण।

disability विकलांगता: विकलांगता की परिभाषा विशेष संदर्भों पर, और ऐतिहासिक व सांस्कृतिक मामलों पर निर्भर होती है। विकलांगता या असमर्थता अनुभव करने वाले व्यक्ति वे होते हैं जिनकी कोई शारीरिक या मानसिक परिस्थिति किसी महत्त्वपूर्ण जीवन–संबंधी क्रिया में उनके आड़े आये, जैसे चलना, साँस लेना, देखना, सुनना, सोचना या काम करना। इसके मुख्य

प्रकार में शामिल हैं: ज्ञानबोध–संबंधी, बीमारी से जुड़ी, शारीरिक, विकास–संबंधी, मानसिक/भावनात्मक, स्थायी/तीव्र, और पर्यावरण–संबंधी विकलांगता या असमर्थता। (रॉस्चर और मक्लिंटॉक 1997)

diversity विविधता: ये उन भिन्नताओं की ओर इशारा करता है जो वर्ग, जेन्डर, प्रजाति, यौनिकता वगैरह से बनती हैं। नारीवाद संघटन के कार्य में विविधता एक राजनैतिक सिद्धांत है, ताकि किसी समूह, संगठन या कार्यसूची में अलग–अलग लोगों को शामिल किया जा सके। चाहे ये प्राकृतिक हों या समाज द्वारा परिभाषित, औरतों की आपसी विभिन्नताओं, और व्यक्ति या समूह के अंदरूनी व आपसी अनेकताओं को जब हम पितृसत्तात्मक दुनिया में अपने साझे अनुभवों के संदर्भ में देखते–समझते हैं, तो हमें बहुत–सी बारीकियाँ नज़र आती हैं और हम बहुत कुछ पाते हैं। हालांकि विविधता बहुत से नारीवादी आंदोलनों के लिए अहम उद्देश्य है, सत्ता और सुविधा/अधिकार–प्राप्ति में अंतर की वजह से यह द्वन्द की वजह भी बन जाता है।

ethnicity प्रजातीयता: एक ज़ुबान बोलने वाले, या जिनका साझा इतिहास, धर्म, संस्कृति या पृष्टभूमि हो, ऐसे लोगों को एक सूत्र में बाँधने वाली सामाजिक रचना। इसे रेस यानी वर्ण/नस्ल से भी जोड़ा जाता है, जो कि केवल शारीरिक विशिष्टताओं पर आधारित है। जैसे कि ''एशियाई'' वर्णीय श्रेणी में शामिल हैं जापानी, थाई, कम्बोडियाई, और प्रशांत महासागर द्वीपवासी।

(**race** वर्ण; नस्ल और **racism** वर्णभेद; नस्लवाद भी देखें)

gender identity जेन्डर पहचान: मनोवैज्ञानिक या अंदरूनी तौर पर ख़ुद को लेकर जेन्डर–बोध, पुरुष या स्त्री या ट्रांसजेन्डर या कोई अन्य जेन्डर के होने की अनुभूति।

(**gender** जेन्डर, **cisgender person** सिसजेन्डर व्यक्ति, और **transgender person/trans*** चमतेवद ट्रांसजेन्डर व्यक्ति/ट्रांस' व्यक्ति भी देखें)

geographic location भौगोलिक स्थान: अंतर या भेदभाव के संदर्भ में इसके मायने हैं कि जिस भी जगह हम रहते हैं वह हमारे विकल्प, अवसर, और संसाधनों तक पहुँच में भूमिका अदा करती है। जैसे शहरों में बसे लोगों की तुलना में गाँव वासियों के साथ भेदभाव होता है क्योंकि गाँवों में संसाधनों तक, सेवाओं तक, निर्णय लेने वालों तक पहुँच की कमी महसूस होती है। कई दशकों से ''उत्तरी विश्व'' और ''दक्षिणी विश्व'' के बीच भी एक महत्त्वपूर्ण भौगोलिक बँटवारा बना हुआ है, जो संकेत करता है उपनिवेशवादी और साम्राज्यवादी इतिहास के उस नतीजे की तरफ़ जिसने उत्तर को संसाधनों तक पहुँच, उनका अधिकतम उपयोग और उनपर नियंत्रण सौंपा है। हालांकि ''उत्तरी विश्व/दक्षिणी विश्व'' की बात करना अब भी उपयुक्त है, इसकी बेहद सीधे–सरल, द्विभाजित (अगर हम एक लोकप्रिय नारीवादी धारणा का प्रयोग करें) समझ की आलोचना हुई है, क्योंकि उत्तरी विश्व में भी एक प्रकार का ''दक्षिण'' मौजूद है (यानी गरीब और बहिष्कृत समुदाय) और दक्षिणी विश्व में भी विशेष अधिकार–प्राप्त लोग मिलेंगे।

heterosexism विषमलैंगिकता के बल पर भेदभाव: यानी वे सारी व्यक्तिगत, संस्थागत व सांस्कृतिक मान्यताएँ और व्यवहार जो इस विश्वास पर टिके हैं कि सिर्फ़ हेटरोसेक्शुएलिटी, या विषमलैंगिकता, प्राकृतिक और उचित किस्म की यौनिकता है। (ग्रिफ़िन और हारो 1997)

homophobia होमोफ़ोबिआ समलैंगिक या समकामी व्यक्तियों, यानी लेस्बियन औरतों और गे आदमियों के प्रति डर, नफ़रत और असहिष्णुता, और ऐसे किसी व्यवहार के प्रति भी द्वेष जिसमें व्यक्ति द्वारा पारम्परिक जेन्डर भूमिकाओं का उल्लंघन हो। (ग्रिफ़िन और हारो 1997)

identity politics पहचान की राजनीति बहुत से समाजों में यौनिकता, वर्ण या नस्ल, या प्रजाति पर आधारित अल्पसंख्यकों का नियमित रूप से बहिष्कार होता है। दक्षिण एशिया में दलित आंदोलन, अमरीका में नागरिक अधिकार के लिए काले (.....) लोगों के आंदोलन, विश्व–भर में अधिकारों के लिए लेस्बियन, गे, ट्रांसजेन्डर लोगों के आंदोलन, जिन सभी का मक़सद है सामूहिक पहचान के आधार पर लोगों को साथ लाना ताकि वे फ़ख़्र महसूस कर सकें, फिरसे इज़्ज़त हासिल कर सकें, और अपनी एक–जैसी आकाँक्षाओं को जान–समझकर अपनी राजनैतिक माँगें रख सकें और भेदभाव का विरोध कर सकें। ऐसे आंदोलनों के ज़रिये राजनीति और समाज द्वारा बहिष्कृत अनेक समूह एकजुटता और सक्रिय नागरिकता का निर्माण कर पाये हैं। पहचान वाली राजनीति के साथ खतरा यह है कि मानव पहचान के अनेक पहलू कहीं एक लेबल में सीमित न हो जाएँ, जिसके चलते आसानी से लोगों को दरकनार किया जा सके, जैसे ''एच आई वी पॉजिटिव'' या ''प्रवासी मज़दूर''; हर व्यक्ति की पहचान अनेक स्तरों पर होती है, जैसे वर्ण, जेन्डर, वर्ग, मज़हब, यौनिकता, प्रजाति, उम्र, वगैरह। पहचान की राजनीति हमें भेदभाव की राजनीति की ओर भी ले जा सकती है, जो औरों के साथ गठबंधन बनाकर साझी ज़रूरतों और हक़ों पर काम करते हुए सबको सम्मिलित करने वाले समाज बनाने के बजाय अलग–थलग ग्रुप के स्वार्थों तक सीमित रहे।

intersectionality इंटरसेक्शनालिटी/अंतरस्तरीयता: एक विश्लेषी औज़ार जो यह समझने, और प्रतिक्रिया करने में मदद करता है, कि किसी भी व्यक्ति की सामाजिक पहचान व दर्जा के भिन्न पहलू किस–किस तरह अनेक स्तरों पर उसके लिए असीम दमन या असामान्य सुविधा–अधिकार के ख़ास तजुर्बे रचते हैं। कुछ हद तक इस अवधारणा का विकास एक आलोचना के जवाब में किया गया, कि राजनैतिक तौर पर ''औरत'' की श्रेणी सारी औरतों के अनुभवों का अति सामान्यीकरण करते हुए, सफ़ेद रंग, मध्य वर्गीय औरतों को केंद्र में रखकर, उन प्रक्रियाओं को नज़रअंदाज़ करती है जो वर्ण, वर्ग, उपनिवेशवाद और भेदभाव के अन्य स्तरों से अलग–अलग औरतों का दमन करती हैं। अंतरस्तरीयता का उद्देश्य है परिचय की उन ज़्यादा ही सरल संज्ञाओं से आगे बढ़कर – जैसे ''मज़दूर वर्ग'' या ''मूल निवासी'' – विशेष सुविधाओं और परतंत्रताओं दोनों की अनेक, उलझी जड़ों की जाँच–पड़ताल करना। (मिलर इत्यादि 2006)

othering अलगावी बर्ताव: सामाजिक बहिष्कार की प्रक्रिया, जिसमें ताक़तवर ग्रुप अपने आप को मानक मान लेता है और ग्रुप के बाहर के सभी लोग उसी के अनुसार परिभाषित किये जाते हैं। ''अलगावी बर्ताव'' उसे भी कहते हैं जब कोई व्यक्ति, समूह या श्रेणी को इंसानों की तरह नहीं बल्कि किसी वस्तु की तरह देखा जाता है (वस्तुकरण)। ऐसे वस्तुकरण के चलते जो दबंग हैं वे दूसरे व्यक्तियों या समूहों के बारे में अपने मनगढ़ंत विचारों को सही बताते हुए उनके दमन को सही साबित कर पाते हैं। (जी एस डी आर सी)

(**social exclusion सामाजिक बहिष्कार** भी देखें)

privilege विशेष अधिकार: ऐसे साधन या हालात तक पहुँच जिनका मज़ा केवल कुछ ही लोग ले सकते हैं, समाज में ओहदे की वजह से, जैसे पुरुष होकर, सफ़ेद रंग का होकर, ख़ास देश का वासी होकर, विषमलैंगिक होकर, अमीर होकर। विशेष अधिकार–प्राप्त व्यक्ति को बहुत से ख़ास फ़ायदे मिलते हैं जैसे संसाधनों तक पहुँच, तरह–तरह के सामाजिक इनाम, और समाज के मूल्यों व मानकों को आकार देने की शक्ति। विशेष अधिकार–प्राप्त व्यक्ति खुद मानक या कसौटी बन जाते हैं जिसपर दूसरों को आँका जाता है, इसीलिए ये व्यक्ति ''व्यक्ति'' माने जाते हैं, जबकि ख़ास अधिकारों और सुविधाओं से वंचित व्यक्ति समाज द्वारा निर्मित श्रेणी से जाने जाते हैं, जैसे नस्ल, राष्ट्र, जेन्डर। (विजेसिंघे, ग्रिफ़िन और लव 1997)

queer क्वीयर: शुरुआत में यह एक गाली थी जिसका इस्तेमाल किया जाता था लेस्बियन व गे व्यक्तियों को नीचा दिखाने के लिए या विषमलैंगिक व्यक्ति को डराने या अपमानित करने के लिए। अब इसे कई लेस्बियन, गे, बाइसेक्शुअल और ट्रांसजेन्डर लोगों ने दावे के साथ अपना लिया है, एक साथ लाने वाला, सकारात्मक शब्द मानकर, जो उन सबकी पहचान का पर्याय बन गया है जो विषमलैंगिक भेदभाव और होमोफ़ोबिया के निशाने पर होते हैं। (ग्रिफ़िन और हारो 1997)

race वर्ण/नस्ल: इसका तात्पर्य शारीरिक विशिष्टताओं से है, लेकिन बहुत से देशों में इसका इस्तेमाल समाज द्वारा निर्मित एक ऐसे ढांचे के लिए किया गया है जो जीव–विज्ञान या आनुवांशिकी तक सीमित नहीं। वर्णीय श्रेणियाँ अक्सर किसी प्रधान जन–समुदाय से जुड़ी होती हैं, और साधारण शारीरिक लक्षणों पर आधारित होती हैं, जैसे त्वचा का रंग। जैसे कि संयुक्त राज्य अमरीका, पश्चिम यूरोप व दक्षिण अफ़्रीका में ''काले'', ''रंजित'', ''अश्वेत'', और ''एशियाई'' को लेकर समझ बन गयी है कि ये सभी आंग्ल/यूरोपीय/उत्तर अमरीकी के ''गोरे'' लोगों से भिन्न हैं। इसी तरह ''गोरापन'' या ''पाश्चात्य–पन'' ऐसी परिकल्पनाएँ हैं जो काली/..... या फिर ''तीसरी दुनिया'' की औरतों के बारे में घिसी–पिटी धारणाओं से खुद को अलग बताती हैं। आम तौर पर वर्णीय श्रेणियाँ समाज में दबंग समुदाय की रचना होती हैं, जिससे वे अपनी ताक़त और आलापन बनाये रख सकें और दूसरे समुदायों के साथ भेदभाव को लेकर सफ़ाई दे सकें। मगर साथ ही, वर्णीय/नस्लीय श्रेणियों का तटस्थ या सकारात्मक इस्तेमाल भी हुआ है, किसी ग्रुप की पहचान बनाने व आपसी गठबंधन स्थापित करने के लिए।

racism वर्णभेद/नस्लवाद: वर्णीय या नस्लीय भेदभाव इस मान्यता पर आधारित है कि इन्सान के गुण और काबिलियत को तय करती है उसकी नस्ल या त्वचा का रंग, जो प्राकृतिक श्रेष्ठता या हीनता दिलाता और दर्शाता है। नस्लवाद और वर्णीय भेदभाव खुले–स्पष्ट हो सकते हैं, जैसे पक्षपाती कानून या नीति। लेकिन ज़्यादातर वर्णभेद सामाजिक और राजनैतिक संस्थानों में और लोगों की मान्यताओं में यूँ गहरा छिपा बैठा होता है कि उसे देखा–परखा ही नहीं जाता।

sexual orientation यौन रुझान: सेक्शुअल पार्टनर को लेकर किसी व्यक्ति की पसंद। कोई व्यक्ति विषमलैंगिक है या समलैंगिक, या बाइसेक्शुअल, यह राजनैतिक बहस का गर्म विषय बन गया है। जैसे कि यौन रुझान सामाजीकरण से जुड़ा होता है, या कि यह निहित होता है, और क्या समलैंगिकता अनैतिक है, वगैरह। अनेक समाजों में यौनिकता से जुड़े मानदंडों का पालन नहीं करने वालों का अति दमन होता है।

social exclusion सामाजिक बहिष्कार: ग़रीबी और असमानता के और गहरे विश्लेषण के लिए, और उन अनेक तौर–तरीकों पर ग़ौर करने के लिए, जिनके चलते लोगों को समाज में पूरी हिस्सेदारी से वंचित रखा जाता है – न सिर्फ़ भौतिक अभावों के ज़रिये बल्कि ग़ैर–आर्थिक तौर पर भी जैसे मानसिक स्वास्थ्य, जेन्डर, शारीरिक सामर्थ्य, जाति, यौन रुझान, और उम्र – नारीवादियों ने, व विकलांगता से जुड़े कार्यकर्ता और क्वीयर अधिकारों पर काम करने वालों ने, इस ढांचे का इस्तेमाल करते हुए इसे और विकसित किया है। यह परिकल्पना ''ग़रीबी'' की भौतिक तौर पर प्रतिकूल परिस्थिति से आगे बढ़कर उन असमानताओं को संबोधित करती है जो समाज में सत्ता के प्रकार हैं और जिनके आधार पर आज़ाद और सम्मानित ज़िन्दगी जी जाती है, जैसे इज़्ज़त, समझ, नागरिकता, शिक्षा, व अन्य अधिकार। (बाटलीवाला, 2011/ब)

socio-economic status सामाजिक–आर्थिक दर्जा: यह व्यक्ति के उस सामाजिक दर्जे की ओर संकेत करता है जो कई मिले–जुले तत्वों पर आधारित है, जैसे शिक्षा और आर्थिक साधन। विशेष अधिकारों से लैस या वंचित होने की अहम निशानी है सामाजिक–आर्थिक दर्जा, जो वर्ग से इस मायने में अलग है कि इसे आंकने के लिए खानदान पर कम ज़ोर दिया जाता है और दूसरे ढांचों से जुड़ी उन बातों पर ज़्यादा, जो आर्थिक अवसर और ओहदा दिलाने के काम आते हैं।

transgender person/trans* person ट्रांसजेन्डर व्यक्ति/ट्रांस* व्यक्ति: वे व्यक्ति जिनकी अपनी जेन्डर पहचान उनके जन्म पर निर्धारित जेन्डर पहचान से मेल नहीं खाती। एक तारे के चिह्न के साथ लिखे जाने वाला यह शब्द ट्रांसजेन्डर अध्ययनों की देन है, जिसके अंतर्गत सभी गैर–सिसजेन्डर पहचानों को शामिल किया गया है, जैसे ट्रांससेक्शुअल, ट्रांसवेस्टाइट, जेन्डरक्वीयर, जेन्डरफ्लूइड, जेन्डरलेस, एजेन्डर, नॉन–जेन्डर्ड, तीसरा जेन्डर, द्विभावी, द्विलिंगी, एम टु एफ (आदमी से औरत), एफ टु एम (औरत से आदमी) ट्रांसआदमी, ट्रांसऔरत, जन्म पर स्त्री जेन्डर निर्धारित व्यक्ति जो आदमी हैंए जन्म पर पुरुष जेन्डर निर्धारित व्यक्ति जो औरत हैं, और कितने ही अन्य जेन्डर पहचान वाले व्यक्ति।

कोई हार्मोन–उपचार व सेक्स रीअसाइन्मेंट सर्जरी के ज़रिये अपने शरीर को अपनी जेन्डर पहचान के और क़रीब लाना चाहते हैं, कोई ऐसा नहीं चाहते। ट्रांस होना सिर्फ़ व्यक्ति के जेन्डर से ताल्लुक़ रखता है, उसके यौनिक रूझान को तय नहीं करता है। (लेबिया 2014, बाइनरी जेन्डर व्यवस्था को तोड़ते हुए)

(**gender identity जेन्डर पहचान** और **cisgender person सिसजेन्डर व्यक्ति** भी देखें)

सत्ता और ज्ञान

feminist epistemology नारीवादी ज्ञानशास्त्र: ज्ञान के उत्पादन पर के असर का अध्ययन या सिद्धांत। ज्ञानशास्त्र का वास्ता इससे है कि हम किसे ज्ञान मानते हैं और यह कौन तय करता है। नारीवादी ज्ञानशास्त्र की मूल समझ के अनुसार ज्ञान निर्मित होता है। कौन इसका निर्माता है (''जानने वाला'' या ''कर्त्ता वाली स्थिति''), इस बात का, और उस वक्त और जगह मौजूद बेशुमार सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक व व्यक्तिगत पहलुओं का, तैयार हो रहे ज्ञान पर विशेष और गहरा

असर पड़ता है। यानी ज्ञान की अपनी परिस्थिति होती है, क्योंकि उसमें हमेशा उसे रचने वालों के पूर्वानुमान, झुकाव, मूल्य और संदर्भ उपस्थित रहते हैं। यूँ देखा जाए तो ज्ञान एक राजनैतिक विषय है, और इसे रचने की ताक़त सामाजिक रिश्तों से निकलकर आती है। (जैस 2008)

hegemony आधिपत्य: वह प्रक्रिया, जिसके द्वारा प्रमुख ग्रुपों या समुदायों के दृष्टिकोण को ''सामान्य बुद्धि'' या ''प्राकृतिक'' व्यवस्था मान लिया जाता है। एक दबंग ग्रुप किस तरह अपनी धारणाओं को फैलाता है, और उन्हें लोकप्रिय व जायज़ बनाये रखने के लिए सहमति हासिल करता है, इसे समझने के इरादे से इतालवी कार्यकर्ता और विचारक आन्तोनियो ग्राम्शी ने सांस्कृतिक आधिपत्य की संकल्पना की। भाषा, संस्कृति, राजनैतिक और आर्थिक व्यवस्था, वगैरह, ये सभी आधिपत्य के माध्यम हो सकते हैं – जिसका मक़सद है यथा स्थिति को सत्ताधारियों के हित में ज्यों की त्यों बनाये रखना।

ideology विचारधारा: सामाजिक वास्तविकताओं को देखने और उनका विश्लेषण करने का तरीका जो विशेष सिद्धांतों व मान्यताओं पर आधारित हो। प्रधान ग्रुप की सत्ता और स्वार्थों को विचारधारा के ज़रिये सही साबित किया जा सकता है, समर्थन दिया जा सकता है, या चुनौती दी जा सकती है। सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, और धार्मिक संस्थान, और परिवार, शिक्षा–प्रणाली, मीडिया, अर्थव्यवस्था, या कानून जैसी व्यवस्थाएँ, विचारधाराओं का प्रचार करती हैं और इन्हें लागू करती हैं। इन संस्थानों–व्यवस्थाओं की स्थापना और इनमें हस्तक्षेप राज्य करता है, और ये सभी अक्सर प्रधान विचारधारा को और दबंग ग्रुपों की सत्ता को मज़बूत करते हैं। नारीवाद जैसी विकल्पी विचारधाराएँ समाज के कम ताक़तवर और दरकिनार समूहों द्वारा प्रतिरोध की एक लगातार प्रक्रिया में पनपती हैं, जिसके चलते सत्ता की गतिविधियों में कमोबेश बदलाव होते हैं, पूरी तब्दीली भी।

oppression दमन: सामाजिक वर्गों के बीच काल्पनिक और असली अंतर पर आधारित एक सर्वांगी सामाजिक तथ्य, जिसके तहत वैचारिक वर्चस्व, संस्थानों पर काबू, और जिन समूहों को दबाया जा रहा है उनपर दमन करने वालों की विचारधारा, तर्क और संस्कृति लादी जाती है। नतीजा यह कि एक समुदाय या समूह अपने फ़ायदे के लिए दूसरे समूह का शोषण करता है। (गुडमन और शपीरो 1997)

paradigm सोच का नक़्शा: प्रतिमान सोच का नमूना या नक़्शा, जिसके ज़रिये लोग अपनी दुनिया समझ सकें और उसकी क़दर कर सकें; एक दृष्टिकोण जो रीति–रिवाजों, व्याख्याओं, एहसासों, संस्थाओं और व्यवहारों का आधार हो। किसी ख़ास समय और समाज के रवैये, मूल्य और सोचने के तरीके उसके ''प्रधान प्रतिमान'' में पाये जाते हैं। मौजूदा वक़्त का प्रधान सोच का नक़्शा या प्रतिमान है वैश्विक पूँजीवाद के दौर में पितृसत्ता।

politics राजनीति: उन सभी फ़र्क़ को मद्देनज़र रखते हुए समझौता–वार्ता करने की प्रक्रिया, जो व्यक्तियों के बीच और समूहों के भीतर या आपस में मौजूद होती हैं – रुझान में फ़र्क़, मतभेद, अलग ज़रूरतें, भिन्न प्राथमिकताएँ। मूल रूप से राजनीति सत्ता से जुड़ी होती है – यानी निर्णय लेते समय किन लोगों के हितों को, और किन आवाज़ों को, देखा–सुना जाता है। राजनीति को अक्सर औपचारिक रूप से निर्णय लेने वाले समूहों से जोड़ा जाता है, जैसे राज्य या राष्ट्र की कानून बनाने वाली सभाएँ, लेकिन राजनीति सारे सामाजिक रिश्तों का हिस्सा होती है, घर–परिवार से लेकर सरकारी संस्थानों के गलियारों तक। (वेनेक्लाज़न और मिलर 2002)

power सत्ता: भौतिक, मानवीय, बौद्धिक, आर्थिक व प्राकृतिक संसाधनों पर समाज के विभिन्न समूहों या व्यक्तियों के नियंत्रण की मात्रा। इन संसाधनों पर काबू पाना माने व्यक्तिगत और सामाजिक सत्ता हासिल करना। सत्ता नितान्त नहीं, बल्कि गतिशील और संबंधों पर निर्भर होती है। व्यक्तियों और समूहों के सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक संबंध के संदर्भो में इसका प्रयोग किया जाता है। इसका वितरण भी असमान होता है; सत्ता के इन स्रोतों पर कुछ व्यक्तियों और समूहों का अधिक नियंत्रण होता है तो कुछ का बहुत कम, या बिलकुल नहीं। अलग–अलग मात्रा में जेन्डर, उम्र, जाति, वर्ग, प्रजाति, वर्ण और स्थान पर आधारित सामाजिक विभाजनों के द्वारा सत्ता को क़ायम और जारी रखा जाता है; और परिवार, धर्म, शिक्षा, मीडिया, क़ानून जैसी संस्थाओं के द्वारा भी। सत्ता, और उसे बरतने वाली बिचौली संस्थाएँ, विविध हैं और बदलती रहती हैं। लगातार चुनौती और प्रतिरोध के ज़रिये, समाज के कम ताक़तवर हिस्से सत्ता के ढांचे में परिवर्तन ला सकते हैं।

विचारक और दार्शनिक सत्ता के अनेक स्रोतों और तरीक़ों में अंतर करते हैं। सत्ता का सबसे जाना–माना चेहरा है ''ऊपर से'' सत्ता का, जिससे जुड़े हैं नियंत्रण, हावी होना, बहिष्कार। यह ''ज़ीरो–सम'' खेल कहलाता है, जिसमें हार–जीत बराबर यानी कुल जोड़ शून्य। सत्ता के विकल्पी, सम्मिलित रूप भी होते हैं, जैसेः ''के साथ'' (जन–सामूहिक) सत्ता, ''के लिए'' (निर्णय ले पाने की) सत्ता, और ''अंदरूनी'' (सशक्तिकरण की) सत्ता। भिन्न विचारकों से व खुद अपने काम से प्रेरित होकर, जैस ग़ौर करता है ''ऊपर से'' सत्ता के प्रकारों पर, प्रत्यक्ष (औपचारिक रूप से निर्णय लेना), अप्रत्यक्ष (टेबल के नीचे की प्रक्रियाएँ जिनके आधार पर निर्णय लिए जाते हैं), अदृश्य (सामाजीकरण), और इनके आपसी रिश्तों पर। नारीवादी आंदोलन निर्माण के संदर्भ में, सत्ता के इन फ़र्क़ों को सामने लाना और इसके स्रोतों और अभिव्यक्तियों को समझना एक रणनीति है, दमन के मायने खोलने और उसे चुनौती देने के साथ–साथ सत्ता बरतने के अलग, सहयोगी तरीक़ों को विकसित करने के लिए। (वेनेक्लाज़न और मिलर 2002, देखें जैस प्रकाशन, मेकिंग चेंज हॅपन 3: रीविजनिंग पावर, 2006)

नेतृत्व और संघटन–कार्य

activist (for justice) कार्यकर्ता (इन्साफ़ के लिए): नाइन्साफ़ी, असमानता और/या दूसरों की व पृथ्वी के कुशल–कल्याण की फ़िक्र करने वाले व्यक्ति, जो औरों के साथ मिलकर राजनैतिक कदम उठायें या उन्हें इस दिशा में संगठित करें, और जिन्हें प्रेरित करते हैं विकल्प में भरोसा, और यह उम्मीद और विश्वास कि बेहतर दुनिया मुमकिन है।

advocacy पैरवी: औपचारिक रूप से राजनीति व योजना के क्षेत्रों में, और सामाजिक रवैयों में, व्यक्तियों और संगठनों द्वारा परिवर्तन लाने की संगठित व सम्मिलित कोशिश। पैरवी को लेकर अनेक तरह की समझ, परिभाषा, रणनीति, और उपयोगिताओं में शामिल हैं

जनहित पैरवी, नीति–संबंधी पैरवी, सामाजिक न्याय–संबंधी पैरवी, नागरिक– केंद्रित और सहभागी पैरवी। नारीवादी पैरवी का जुड़ाव हर उस रणनीति, कौशल, और उपकरण से है जो सार्वजनिक और सामाजिक क्षेत्रों में निर्णय की प्रक्रियाओं को औरत और आदमी के बीच असमानताएँ मिटाने की दिशा में प्रभावित करे। अक्सर यह दमन–शोषण और बहिष्कार को चुनौती देती है। नारीवादी पैरवी का उद्देश्य है विविधता और विभिन्नता के लिए सम्मान, और औरतों की पूरी और सक्रिय नागरिकता के लिए सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनैतिक बदलाव हासिल करना। (अजेंड 2001)

सशक्तिकरण, नागरिकता, और सहभागिता से जुड़ी पैरवी, और नीतियों में सुधार पर केंद्रित पैरवी की कोशिशों में, फ़र्क़ नज़र आता है। दूसरी पैरवी का मक़सद सिर्फ़ नए मुद्दों सहित वार्तालाप में शामिल होना नहीं, बल्कि उस वार्तालाप का आकार ही बदल देना है ताकि उसमें बिलकुल नए अदाकारों के लिए जगह बने। कारगर पैरवी वह है जो सत्ता की असमानताओं को चुनौती दे और सोच को बदले। (वेनेक्लाज़न और मिलर 2002)

agency निर्णय की शक्ति: कार्य कर पाने की बिसात का होना, या ताक़त बरत पाना। सामाजिक बदलाव की आम कोशिशों में ऊपर–से–नीचे वाले, विशेषज्ञों पर निर्भर, और/या बाहरी आग्रह होता है, और वे मुख्य हिताधिकारियों को निर्णायकों के बजाय उन्हें महज़ बदलाव के निशानों के रूप में देखते हैं। इसके विपरीत, आंदोलन का निर्माण और ऐसे अन्य सशक्तिकरण वाले तरीक़े मुख्य हिताधिकारियों को ज़ाहिर तौर पर शामिल कर उनका समर्थन करते हैं, ताकि वे अपने अनुसार बदलाव का मतलब तय करें और उसे लाने के कार्य में अग्रसर रहें।

citizen and citizenship नागरिक और नागरिकता: नागरिक को लेकर सबसे आम समझ है किसी ख़ास देश का वासी जो उसकी सरकार के अधीन हो और जो उसके द्वारा उपलब्ध सुरक्षा और अधिकारों का हक़दार हो। नागरिकता को इस क़ानूनी परिभाषा के अंतर्गत हक़ों और जिम्मेदारियों की नज़र से देखा जाता है। सरकारें भले ही इस बात पर क़ानूनी नियंत्रण लगायें कि कौन नागरिक है और कौन नहीं, लोकतंत्र और राज्य की भूमिका की अलग–अलग समझ के चलते नागरिकता की परिभाषा विविध होती जाती है। मौजूदा तंग समझ के अनुसार सरकार ही फ़ैसला कर सकती है कि कौन जायज़ तौर पर उस जगह का कहलाये (जैसे देशान्तर्वासियों का नहीं गिना जाना); नागरिक हक़ सीमित हैं मतदान करने और सार्वजनिक सेवाओं–सुविधाओं के इस्तेमाल करने तक। इसके विकल्प में सामाजिक न्याय से जुड़ी नागरिकता और नागरिक होने की धारणा गतिशील है – रचनाकार होना, असरदार होना – ''सेवन और चयन'' वाली उपर्युक्त परिभाषा से हटकर (गेवन्टा 1997)। नारीवादी नज़रिये से देखें तो नागरिकता का अर्थ है ज़िन्दगी के हर क्षेत्र में – सार्वजनिक, निजी, आत्मीय – सत्ता के पीढ़ी–क्रमों को चुनौती देने के लिए और अपने हक़ों की रक्षा के लिए आवाज़ उठाना और जवाबदेही की माँग करना। (वेनेक्लाज़न और मिलर 2002)

coalitions, alliances and networks सम्मिलन, गठबंधन और नेटवर्क: हालांकि अलग–अलग संदर्भों में इन शब्दों के कुछ अलग मायने बनते हैं, इन्हें अक्सर पर्याय के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। विभिन्न सदस्यों के उद्देश्यों और ज़रूरतों के हिसाब से परस्पर संबंधों को आकार दे पाने के लिए इनमें भेद करने से मदद मिलती है। आम तौर पर सम्मिलन का ढांचा ज़्यादा औपचारिक होता है, स्टाफ़ व स्थायी समिति के सहित, और इनके सदस्यों के बीच अक्सर दीर्घकालिक संबंध होते हैं। गठबंधन किसी ख़ास उद्देश्य या वक़्त पर साथ आने वालों के बीच अल्पकालिक रिश्तों से बनते हैं। ज़्यादातर नेटवर्क अनौपचारिक व लचीले संगम होते हैं जिनमें व्यक्ति और समूह किसी साझे हित या समान मुद्दे की वजह से जुड़ते हैं और जिसके ज़रिये वे जानकारी और विचारों का आदान–प्रदान करते हैं। (वेनेक्लाज़न और मिलर 2002)

community organizing सामुदायिक संगठन–कार्य: सामुदायिक संगठन–कार्य एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके चलते किसी आम मुद्दे को लेकर या किसी समस्या से जूझने के लिए लोग मिलकर काम करते हैं, जिसका एक पहलू है अपने इर्द–गिर्द की नीतियों और सांस्कृतिक माहौल पर प्रभाव डालकर हल निकालना। अक्सर सामुदायिक संगठन–कार्य की शुरुआत किसी स्पष्ट, अपूर्ण व्यावहारिक ज़रुरत से होती है, और मौजूदा ढांचे में समस्या की जड़ों से जूझते हुए इसका विकास होता है, जो फिर सत्ता में बदलाव लाता है। संगठन–कार्य का एक बिलकुल अहम हिस्सा है सामुदायिक लीडरों का उभर पाना, जिनकी इस प्रक्रिया के ज़रिये राजनैतिक गतिविधियों, परिवर्तन व संगठन को लेकर बेहतर समझ बनती जाये। (वेनेक्लाज़न और मिलर 2002)

critical consciousness विवेचनात्मक चेतना: दुनिया के बारे में और सत्ता के परिचालन को लेकर एक लगातार विकसित होने वाला बोध। नारीवादी आंदोलन के निर्माण–कार्य में यह रणनीति भी है, उद्देश्य भी, जिसमें शामिल है व्यक्तिगत अनुभवों पर राजनैतिक और आर्थिक व्यवस्था के असर को समझना; इतिहास और सामयिक घटनाओं की जानकारी; सत्ता की गतिविधियों का आभास। खुद को समझना भी इसका हिस्सा है, जैसे एक ही समय में अधिकार–प्राप्त होना व दमन भी झेलना (यानी वर्ण, वर्ग, जेन्डर पर आधारित विविध और अलग तजुर्बे)। औरतों को अपनी परिस्थिति को लेकर समीक्षात्मक चेतना विकसित करने से उस आत्म–संशय से उभरने में सहायता मिलती है जो परतंत्रता और लिंग–आधारित भेदभाव का नतीजा है, और तब हम अपनी ताक़त को पहचान कर उसका इस्तेमाल कर पाते हैं और दूसरों के साथ जुड़कर समान मुद्दों पर काम कर पाते हैं। (वेनेक्लाज़न, 2006)

constituency building संघटक समाज तैयार करना: जो लोग संबंधित मुद्दे से सबसे प्रभावित हों, पैरवी की योजना और नेतृत्व में उनकी भागीदारी को और मज़बूत बनाने की क्रियाएँ। संघटक समाज की तैयारी तब कारगर होती है जब उससे संगठन और लोगों की राजनैतिक आवाज़ को बढ़ावा मिले, साथ ही बदलाव लाने की कोशिशें और विश्वसनीय व असरदार बनें। लेकिन सत्ता और नागरिकता के दीर्घकालिक सवालों का ख़याल न करते हुए केवल नीति से जुड़े दावों की मज़बूती और वैधता के लिए संघटक समाज पर ध्यान देने वाली कुछ कोशिशों को आलोचकों ने ''यंत्रवादी'' ठहराया है, या और भी बुरे नतीजे ये हुए हैं कि बदलाव का समर्थन करने वाले समुदायों को भी ऐसी कोशिशों ने पृथक कर दिया है। (वेनेक्लाज़न और मिलर 2002)

democracy लोकतंत्र: निर्णय लेने की वह व्यवस्था जिसमें सत्ता का परिचालन आम लोगों के हाथ में हो। लोकतंत्र न सिर्फ़ उन

ढांचों पर निर्भर है जो नागरिकों को फ़ैसले लेने दें, बल्कि इसपर भी कि यही लोग अपनी ज़िन्दगी पर असर करने वाले फ़ैसलों के बारे में अपनी बात रख पाने के लिए आज़ाद, जानकारी–प्राप्त और सुरक्षित हों। नारीवादियों के लिए घरेलू मामलों, यौनिकता–संबंधी क्षेत्र, मीडिया, ज्ञान के निर्माण, व आर्थिक क्षेत्र में लोकतान्त्रिक हिस्सेदारी के सवाल उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं जितना कि सार्वजनिक क्षेत्र में सहभागिता का स्तर।

empowerment सशक्तिकरण इस प्रक्रिया में क्रियाओं की एक पूरी श्रृंखला शामिल है, व्यक्तिगत तौर पर आत्म–अभिकथन से लेकर सामूहिक जुटाव और प्रतिरोध तक, जिनका लक्ष्य है उन संस्थागत शक्तियों और सत्ता की गतिविधियों को उलट देना जो औरतों और अन्य सुविधा–हीन समूहों को दरकिनार करती हैं। सशक्तिकरण की शुरुआत तब होती है जब व्यक्ति असमानता की उस व्यवस्था की ताक़तों को पहचानकर, जो उनके जीवन पर प्रभाव डालती हैं, औरों के साथ मिलकर जागृत तौर पर सत्ता के मौजूदा संबंधों को बदलने की दिशा में सक्रिय हों। (बाटलीवाला, 1994)

engendered citizenship उत्पन्न की हुई नागरिकता: इस अवधारणा के तहत औपचारिक राजनैतिक क्षेत्र में व्यक्ति के निहित हक़ और जिम्मेवारियों को सभी सामाजिक रिश्तों और संस्थाओं पर लागू किया जाता है, ख़ास तौर पर परिवार पर, जो आम समझ में ''निजी'' मामला होने की वजह से सार्वजनिक क्षेत्र के कानून और नीतियों के अधीन नहीं होता। (मॉलिनो 1997)

feminist leadership नारीवादी नेतृत्व नेतृत्व के बारे में विकसित हो रहा सोच का तरीका, जिसमें सत्ता और ऊँचे पदों को – चाहे वे व्यक्तियों के बीच या संस्थाओं और आंदोलनों के भीतर हों, या राज्य के अंदर या बाहर – पारम्परिक रूप से दरकिनार लोगों पर विशेष ध्यान देने वाली प्रक्रियाओं और ढांचों के निर्माण के लिए इस्तेमाल किया जाए, जो उनकी लोकतान्त्रिक हिस्सेदारी को बढ़ावा दें, और जो खरी, जायज़ और संघटक समाजों व साझेदारों के प्रति जवाबदेह रूप से काम करें। (बाटलीवाला, 2011)

feminist popular education प्रचलित नारीवादी शिक्षा: एक राजनैतिक और सामूहिक शिक्षण प्रक्रिया जिसका उद्देश्य है ''चेतना जगाना'', सीखने वालों की आवाज़ों और जी गयी हक़ीक़तों को केंद्र में रखते हुए और सत्ता व पुरुष–प्रधानता का विश्लेषण कर पाने में उनकी सहायता करते हुए। ब्राज़ीली विद्वान–कार्यकर्ता पाउलो फ्रेइरे ने कोई पचास साल पहले इस तरह की शिक्षा ईजाद की। फ्रेइरे की प्रणालियों की व्यापक रूप से आलोचना भी हुई है और अनुकूलन भी, जिसके चलते बहुत–सी सहभागी और पारस्परिक शैक्षणिक विधियाँ तैयार हुई हैं। प्रचलित नारीवादी शिक्षा जेन्डर और वर्ग के आधार पर किये जाने वाले दमन का विश्लेषण शामिल करती है, और चेतना में जागरूकता और बदलाव लाने के लिए व्यक्तिगत ज़मीन से शुरुआत करती है। इस तरह से यह निजी क्षेत्र में सत्ता की गतिविधियों पर प्रभाव डाल पाने की समझ और क्षमता विकसित करना चाहती है: परिवार, यौन रिश्ते, और शादी। ख़ुद को लेकर औरत के एहसास पर, उसके आत्मविश्वास, स्वास्थ्य, शरीर के प्रति भावनाओं पर, उसकी मनोवैज्ञानिक अवस्था, और अपने जीवन के हर क्षेत्र में सम्पन्नता और सुख ढूँढ पाने की क्षमता पर समाजीकरण के असर को प्रचलित नारीवादी शिक्षा मानती और पहचानती है। (फ्रेइरे 1970 और वेनेक्लाज़न 2006)

feminist transgression नारीवादी ढंग सीमा–उल्लंघन: हर तरह का व्यक्तिगत या सामूहिक प्रतिरोध जो पूँजीवादी पितृसत्ता द्वारा औरतों पर लादे हुए मूल्यों और रिवाजों को चुनौती दे या उन्हें पलट दे, और जिसका उद्देश्य है हर प्रकार के दमन को मिटा देना। बढ़ते दमन, कट्टरवाद, और हिंसा के ख़िलाफ़ लड़ने वाली औरतों को पहचानकर उनके साथ एकजुट होकर काम करना नारीवादी आंदोलन के निर्माण का अहम पहलू है।

intention/intentionality इरादे के साथ: मूल रूप से इसका मतलब है उद्देश्य का ज़ाहिर और मज़बूत होना। मारीया सुआरेज़ ने मीसोअमेरिका में नारीवादियों द्वारा सामाजिक या राजनैतिक बदलाव की कोशिशों के विवरण के लिए योजना–संबंधी तौर पर इस शब्द का इस्तेमाल किया। उद्देश्य और नतीजे पर आधारित योजना और मूल्यांकन के उन पंक्तिरूप ढांचों के एक विकल्प के रूप में यह धारणा विकसित की गयी, जिन्होनें सामाजिक बदलाव की कोशिशों को अराजनैतिक बनाने का काम किया है। योजना–कार्य से जुड़ी मौजूदा तकनीकी, संख्यात्मक पद्धति उस कार्य–कारण वाली सोच पर ज़ोर देती है जो नारीवादी संघटन–कार्य की गतिशील विधियों को सही–सही समझ नहीं पाती और जो अक्सर सतह के नीचे छिपे असमानता को बढ़ावा देने वाले ढांचों (यानी सत्ता) की ओर ध्यान नहीं देती। इस उक्ति में राजनैतिक काम की गतिशीलता और अनिश्चितता को उभारने और लचीलेपन को बनाये रखने के साथ साफ़–साफ़ राजनैतिक मायनों को व्यक्त करने की कोशिश है, ख़ास तौर पर वर्तमान और संभाव्य आर्थिक डोनर्स के लिए।

(**NGO-ization एन जी ओ–करण** भी देखें।)

mobilize जुटाना;: राजनैतिक कार्यकर्ता के रूप में लोगों को जुटाना, ऐसी गतियों के ज़रिये जो तरतीब से तादाद तैयार कर उसकी ताक़त इस्तेमाल करें, माँगें जाहिर करने के लिए, सत्ताधारियों पर असर डालने के लिए, और आख़िरकार किसी ख़ास राजनैतिक उद्देश्य पूरा करने के लिए। बहुत बार लोग पाते हैं कि उन्हें किसी ऐसी कार्यसूची की सेवा में ''जुटाया'' गया या ''रफ़ा–दफ़ा'' किया गया है जिसके बारे में उनसे कुछ पूछा या बताया नहीं गया हो। इससे जुड़ाव कमज़ोर पड़ सकते हैं और लोगों में बैर और अलगाव की भावनाएँ पनप सकती हैं। इसके विपरीत, आंदोलन के निर्माण वाली जुटाव की पद्धति में लोगों का समर्थन हासिल करने के अलावा उनकी अपनी एक राजनैतिक भूमिका तैयार की जाती है, और शिक्षा के साथ–साथ नए नेतृत्व के निर्माण पर ज़ोर दिया जाता है। (वेनेक्लाज़न और मिलर 2002)

(**constituency building संघटक समाज तैयार करना** भी देखें)

movement आंदोलन: इसमें शामिल हैं: a) संघटक समाज का व्यवस्थित समूह जो राजनैतिक बदलाव के साझे कार्यक्रम के लिए मिलकर काम कर रहा हो; b) सदस्यता या संघटक समाज का आधार – यानी वे व्यक्ति और समूह जिनका बदलाव में निहित हित हो; c) कुछ हद तक औपचारिक या अनौपचारिक संगठन – नेटवर्कों, सदस्य–समूहों, इत्यादि का – जो आंदोलन के व्यवस्थित केंद्र का हिस्सा हों; d) एक स्पष्ट राजनैतिक कार्यसूची – समान विश्लेषण, मक़सद, बदलाव के लक्ष्य; म) संघटक समाज से कई स्तरों पर आने वाला नेतृत्व – यानी जो पूरी तरह बाहरी नेतृत्व पर निर्भर न हो; f) साझे उद्देश्यों के लिए सामूहिक या संयुक्त कार्य –

आंदोलनों का आधार सिर्फ़ सेवाएँ प्रदान करना नहीं (हालांकि सदस्यों के लिए वे ऐसा कर सकते हैं) बल्कि बदलाव के लिए काम करना है; g) समय के बहाव के साथ थोड़ी–बहुत निरंतरता (आंदोलन ''अभियान'' नहीं होते, लेकिन वे रणनीति के तौर पर अभियान चला सकते हैं, ना ही वे किसी विशेष मुद्दे को लेकर एक बार के संघर्ष हैं); और h) ऐसी रणनीतियाँ जिनमें प्रतिवाद (जैसे मार्च, विरोधी प्रदर्शन) और आलोचनात्मक सहयोग (पैरवी और प्रचार) का मेल हो – यानी वे रणनीतियाँ जो राजनैतिक संघर्ष का प्रकट रूप हैं।

feminist movements नारीवादी आंदोलन (अनेक): वे आंदोलन जिनके) जेन्डर–आधारित राजनैतिक लक्ष्य हों, जो औरतों के हितों का पक्ष लेते हों और जेन्डर व सामाजिक सत्ता दोनों के रिश्तों के रूपांतर के तरीके खोजते हों; इ) जेन्डर–आधारित रणनीतियाँ हों – जो औरतों की अपनी रणनीतियों और काबिलियतों को आधार बनाकर, हर कदम पर औरत सदस्यों को शामिल करते हों; और ब) जिस समस्या से जूझने या परिस्थिति को बदलने की कोशिश जारी हो, उसके जेन्डर–आधारित नारीवादी विश्लेषण से निर्मित कार्यसूची हो।

movement-building आंदोलन–निर्माण: साझी समस्याओं और मुद्दों के संदर्भ में समुदायों और/या संघटक समाजों को आयोजित व इकट्ठा करने की प्रक्रिया; यह समस्या के कारणों के विश्लेषण को लेकर सहमति पर, और अल्पकाल व दीर्घकाल के लिए बदलाव की समान कल्पना और कार्यसूची पर निर्भर होती है; आंदोलन–निर्माण के लिए यह भी ज़रूरी होता है कि भागीदारों के बीच प्रचार के उसूल और तरीकों, भूमिकाओं, ज़िम्मेदारियों, और आंदोलन के भीतर की संचालन–प्रणाली की परिभाषाएँ स्पष्ट–समान हों।

feminist movement- building नारीवादी आंदोलन–निर्माण: राजनैतिक संघटन–कार्य, जिसकी ख़ासियत है सम्मिलन और समानता पर आधारित ऐसी प्रक्रियाएँ जो व्यक्तिगत निर्णय की शक्ति और समान कार्यसूची दोनों को बढ़ावा दें, ताकि ये सामूहिक राजनैतिक काम का आधार बन सकें। नारीवादी आंदोलन–निर्माण किसी ख़ास मुद्दे या मुद्दों तक ना ही सीमित होता है और ना ही इनसे परिभाषित (जैसे कि ''औरतों के मुद्दे'' मसलन प्रजनन–संबंधी अधिकार या समान वेतन), बल्कि यह अलग–अलग सामाजिक आंदोलनों और कार्यसूचियों से जुड़ी औरतों को इकट्ठा लाने के काम को अहमियत दे सकता है। नारीवादी आंदोलन का निर्माण नारीवादी विश्लेषण और सिद्धांतों को, और विशेष रूप से औरतों की बराबर भूमिका और आवाज़ को, अन्य कार्यसूचियों व आंदोलनों में लेकर आता है, जिसमें शामिल हैं पर्यावरण, मानवाधिकार, अमन से जुड़े, व श्रमिक आंदोलन। यह नारीवादी आंदोलन–निर्माण की उस प्रक्रिया से अलग है जिसके तहत औरतों का और औरतों के समूहों का उन संघर्षों के लिए जुटाव किया जाता है जिनके उद्देश्य जेन्डर समानता के विशिष्ट परिणामों से संबंध रखते हों, जैसे यौनिक व प्रजनन अधिकार या औरतों के प्रति होने वाली हिंसा। (श्रीलता बाटलीवाला, 2008 और जैस 2009)

NGO एन जी ओ; ग़ैर–सरकारी संस्था

NGO-ization एन जी ओ–करण सामाजिक न्याय के प्रयासों के आयोजन पर ग़ैर–सरकारी संस्थाओं के हावी होने की आलोचना के लिए ईजाद की गयी उक्ति, जो सिविल सोसायटी के व्यवसायीकरण और संस्थानीकरण के चलन की तरफ़, और समुदायों व संगठित समाजों से जवाबदेही हटाकर उसे आर्थिक डोनर्स के हवाले कर देने की प्रवृति की ओर भी इशारा करती है। हालांकि एन जी ओ बहुत प्रकार के होते हैं और निहित रूप से समस्यात्मक नहीं होते, इस आलोचना में दम है कि एन जी ओ–करण अक्सर सामाजिक न्याय की कोशिशों से राजनीति बाहर करके उनको कमज़ोर बनाता है, और सत्ता को चुनौती देने वाली ज़मीनी संस्थाओं की जगह तकनीकी–तांत्रिक संस्थान ले आता है, जो डोनर के फ़ंड पीते–पीते ज़मीनी संघटक समाजों की ज़रूरतों, तजुर्बों, और प्राथमिकताओं से दूर होते चले जाते हैं।

> ''एन जी ओ–करण को लेकर विवाद, अगर नरमी से भी कहा जाये तो, काफ़ी गरम और अक्सर तीखा था। सबसे सख़्त आलोचकों की नज़र में एन जी ओ असल में नारीवादी नैतिक सिद्धांतों के साथ गद्दारी कर रहे थे। (एन जी ओ) नारीवादी कार्यसूचियों से राजनीति बाहर कर नव–उदारवादी कार्यक्रमों का साथ दे रहे थे। लेकिन नारीवादी एन जी ओ के बारे में इस तरह की बहुव्यापी राय, कि वे एक वैश्विक नव–उदारवादी पितृसत्ता के सहायक हैं, असल में अलग–अलग एन जी ओ की विविधता और उभयवृत्ति पकड़ नहीं पायीं, चाहे वे किसी ख़ास देश के या इलाके के या फिर आस–पड़ोस के ही एन जी ओ हों। अच्छे एन जी ओ/बुरे एन जी ओ वाली बाइनरी यानी द्विआधार नारीवादी एन जी ओ की बहुरूपी पहचान के साथ न्याय नहीं करतीः तकनीकी संस्थाएँ जिनमें से कुछ, साथ ही, उसका गहन हिस्सा हैं जिसे हम 'आंदोलन' का नाम देते हैं।'' (अल्वारेज़ 2008)

organizing संघटन–कार्य: किसी साझे मुद्दे का सामना करने, या न्याय की विकल्पी कार्यसूची को बढ़ावा देने के लिए, नेतृत्व की रणनीतियाँ और सामूहिक सक्षमता विकसित करने के इरादे से लोगों को साथ लाना। न्याय के संघटन–कार्य से जुड़े लोग अक्सर वही होते हैं जो सिस्टम की वजह से प्रतिकूल परिस्थिति में हैं और निर्णय लेने के मौकों व स्थानों से, और इनका साथ देने वालों द्वारा, बाहर रखे गए हैं। आदर्श तौर पर, समस्याओं से जूझने के लिए, और ऐसी संस्था व आंदोलन के निर्माण के लिए जो आपसी सम्मान, भरोसा और समान उद्देश्य से बँधे हों, लोग धीरे–धीरे नेतृत्व में अधिक भूमिका लेने लगते हैं।

(**constituency building संघटक समाज तैयार करना** भी देखें)

outreach (for organizing) पहुँच बढ़ाना (संघटन–कार्य के लिए): विविध प्रकार की रणनीतियाँ – योजना बनाने और संघटन–कार्य में सहभागिता, मीडिया, शिक्षा, जुटाव, व सीधी भर्ती – जिनका उद्देश्य है संघटक समाजों का समर्थन और साथ पाना, और सक्रिय नागरिकों के रूप में उनकी क्षमता बढ़ाना।

participation सहभागिता: एक सक्रिय और सुविज्ञ प्रक्रिया जिसके ज़रिये लोगों की चेतना व नागरिकता और व्यापक हो, वे सत्ता के साथ ज़ूझ पाना सीखें, हल निकालें और उन फ़ैसलों को प्रभावित कर सकें जो उनके जीवन से ताल्लुक रखते हों।

resistance प्रतिरोध: सत्ता के हावी या प्रमुख ढांचों को चुनौती देने का काम। कुछ तरह के प्रतिरोध रोज़ाना होते हैं, जैसे परिवार के भीतर जेन्डर की कड़ी भूमिकाओं को चुनौती देना या काम की जगह पर भेदभाव को सही नाम देना। दूसरी ओर, व्यवस्थित व

सामूहिक प्रतिरोध कई प्रकार के होते हैं – ख़ामोश विरोध–प्रदर्शन जैसे सूक्ष्म, प्रतीकात्मक क्रिया से लेकर बिलकुल ज़ाहिर प्रदर्शन जैसे मार्च, हड़ताल, या बहिष्कार। प्रतिरोध निहित रूप से एक गतिशील, क्रांतिकारी और उग्रवादी काम है, जो कभी–कभी तब इस्तेमाल में लाया जाता है जब सत्ता के प्रचलित माध्यमों व औपचारिक संस्थानों के साथ संपर्क–संवाद नाकाम हो जाये।

resonance प्रतिध्वनि समानुभूति और एकजुटता के आधार पर औरों की ज़िंदगियों, एहसासों, और संघर्षों में अपनी ज़िंदगियों और तजुर्बों की झलक देख पाना, जो रूपांतर की गुंजाइश रखने वाली राजनैतिक प्रक्रिया है, क्योंकि यह भेदभाव का विश्लेषण कर पाने में लोगों की सहायता करती है, साथ ही प्रेरित करती है कि रिश्तों को और गहरा बनाते हुए न्याय और कार्य की नयी संकल्पनाएँ रचें। (सुआरेज़ और मिलर)

safe space (for feminist organizing) सुरक्षित स्थान (नारीवादी संघटन–कार्य के लिए): एक सुरक्षित परिवेश जिसकी बुनियाद है भरोसा और जहाँ औरतें खुलकर पूरी ईमानदारी से अपने डरों या ख़तरों की बात कर सकें और, ज़रुरत होने पर, अति थकावट और हिंसा के शारीरिक और मनोवैज्ञानिक असर से उभरकर संसाधनों से परिचित हो सकें और हल खोज सकें। ऐसी महफ़ूज़ जगहों में औरतों के आपसी फ़र्क़ पहचाने जाते हैं और इस बात का ख़ास तौर पर ख़याल रखा जाता है कि यहाँ उन दमनकारी सामाजिक पीढ़ी–क्रमों को दोहराया न जाए जो किसी औरत या औरतों के समूह को विशेष अधिकार दिलाती हैं और किसी और व्यक्ति या समूह को ख़ामोश कराती हैं। कई हालात में औरतों की राजनैतिक सहभागिता दुर्बल बनाने या उन्हें चुप करने के लिए शारीरिक, भावनात्मक, और मनोवैज्ञानिक हिंसा को औज़ार की तरह इस्तेमाल किया जाता है। क़ायम और चलित रह पाने के लिए नारीवादी संघटन–कार्य को ऐसी जगहों की ज़रुरत है जहाँ औरतों द्वारा प्रतिरोध के जवाब में मिलने वाले द्वन्द और हिंसा से जूझ पाना संभव हो, और जहाँ ख़तरों के आंकलन के तरीके और सुरक्षा के उपाय तैयार किये जा सकें।

wellbeing कुशल–कल्याण: स्वस्थ, संतुष्ट, और सम्पन्न होने की अवस्था। सक्रियतावाद हमारे सुख–सेहत को ख़तरे में डाल सकता है, ख़ासकर जोखिम भरे माहौल में, और हममें से बहुत लोग अपना काम कर पाने के लिए काफ़ी बड़ी व्यक्तिगत क़ीमत चुकाते हैं। सशक्त होना और खुलकर बात करना औरतों के लिए घर, समुदाय और संस्था के अंदर बड़ा निजी संकट पैदा कर सकते हैं, जिसकी वजह से उन्हें राजनैतिक भूमिका व जुड़ाव से पीछे हट जाना पड़ता है ताकि वे लांछन से बच सकें और उन्हें परिवारों–प्रियजनों से अलग न होना पड़े। कुशल–कल्याण तब और भी अहम राजनैतिक मुद्दा बन जाता है जब आर्थिक अस्थिरता व ग़रीबी के चलते औरतों की सारी ताक़त उनके परिवारों के गुज़ारे पर केंद्रित हो जाती है। दीर्घकालीन तौर पर बने रहने के लिए ज़रूरी है कि नारीवादी संघटन–कार्य व सामाजिक और राजनैतिक बदलाव की कोशिशें औरतों के शरीर और सेहत पर मौजूदा पल के असर की अहमियत को पहचानें, और खुद की देखभाल के साथ चुस्ती, कल्पना शक्ति और उम्मीद को तरोताज़ा बनाये रखने के अवसर शामिल करें। विकास के और व्यापक संदर्भ में, बहुत से नारीवादी और कार्यकर्ता यह तर्क पेश करते हैं कि जहाँ तक जीवन–स्तर के विविध पहलुओं तक पहुँच के सूचकों का सवाल है (जिसमें वहनीयता भी शामिल है), विकास का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए जन–समुदाय का कुशल–कल्याण, ना कि कोरा आर्थिक विकास। यह नज़रिया विकास के विकल्पी परिप्रेक्ष्य की पुकार के आधारों में से एक है।

राज्य

civil society सिविल सोसायटी / नागरिक समाज: परिवार, बाज़ार, और राज्य के आपसी सामाजिक व्यवहार का वह क्षेत्र जिसकी अन्तर्निहित शक्ति तय करते हैं सामुदायिक सहयोग, स्वयंसेवी संपर्क, और सार्वजनिक संचार नेटवर्क के स्तर। नागरिक समाज में शामिल हैं लाभ–निरपेक्ष व ग़ैरसरकारी संस्थाएँ, और ज़मीनी स्तर के दल जो सेवाएँ प्रदान करते हैं या नागरिक हितों के प्रतिनिधि होते हैं (जैसे मानवाधिकार संस्थाएँ, मज़दूर यूनियन, समुदाय विकास दल, ग़ैरसरकारी विश्वविद्यालय)। सशक्त नागरिक समाज में अनेक प्रकार के दल होते हैं, खुला संचार–संवाद होता है, और सार्वजनिक जुड़ाव का स्तर ऊँचा होता है। दबावी राज्य सामाजिक संबंधों व संस्थाओं पर नियंत्रण रखते हैं और अक्सर उन मूल्यों का विनाश करते हैं जो जन–सहयोग के लिए ज़रूरी हैं। (वेनेक्लाज़न और मिलर 2002)

development विकास: एक बहु–आयामी प्रक्रिया जिसमें शामिल हैं सामाजिक ढांचों, आम रवैयों, और राष्ट्रीय संस्थानों में बड़े स्तर के बदलाव के साथ आर्थिक बढ़ाव में तेज़ी, असमानता में कटौति और व्यापक ग़रीबी का मिटाना। (गेब्रिएलाज़ विमन्ज़ पार्टी, फ़िलिपींस)

family परिवार: परिवार को परिभाषित करती है रिश्तों की एक श्रृंखला, जन्म, दत्तकग्रहण, वंशावली, शादी, सामान्य विधि साझेदारी या दूसरी सामाजिक प्रतिबद्धताएँ। अक्सर ये रिश्ते किसी एक गृहस्थी तक सीमित न रहकर अनेक गृहस्थियों और कुनबों तक फैले होते हैं। परिवार जिन सामाजिक रवैयों और मूल्यों का प्रचार करता है वे राज्य, नागरिक समाज, और बाज़ार को प्रभावित करते हैं। नव–उदारवाद परिप्रेक्ष्य में परिवार को निजी क्षेत्र माना गया है; इसके बावजूद, पारिवारिक रिश्तों के कुछ पहलुओं का नियम–निर्धारण अक्सर क़ानून करते हैं। (वेनेक्लाज़न और मिलर 2002)

fundamentalisms (अनेक) कट्टरवाद: एक सार्वभौमिक हक़ीक़त; किसी ख़ास विचारधारा को आधार बनाकर उसका सख़्ती से पालन करते हुए – चाहे वह धार्मिक हो या राजनैतिक या आर्थिक या कुछ और – उसे सभी सामाजिक, राजनैतिक, और आर्थिक व्यवस्थाओं व ढांचों पर थोपने की ज़ोरदार कोशिशें। कट्टरवादी प्रवृत्तियाँ हर मज़हब में मौजूद हैं, जैसे बौद्ध, कॅथलिक, ईसाई, हिन्दु, यहूदी, इस्लाम, और स्थानीय धार्मिक परम्पराएँ जैसे केन्या का प्रजातीय–धार्मिक मुंगीकी आंदोलन, मेक्सिको का देशज टेपेहुआँ, और नेपाली शामनवाद। कट्टरवाद के प्रकार और विषय विभिन्न हैं, लेकिन उनमें अक्सर कुछ समानताएँ होती हैं, जैसे किसी भी अन्य दृष्टिकोण के प्रति असहिष्णुता, और मतभेद का दबाया जाना। कट्टरवादी दायरों के भीतर औरतों को प्रजननकर्ता की भूमिका में और समुदाय की सामूहिक पहचान के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। इसका नतीजा होता है औरतों के शरीर

और उनकी स्वायत्तता को लेकर मनोग्रति, और जेंडर भूमिकाओं की सख़्त परिभाषा व निर्देश। हालांकि अलग–अलग इलाकों और धर्मों के कट्टरवादी आंदोलन कोई इस तो कोई उस मुद्दे पर ज़ोर देते हैं, हर संदर्भ में ये मुहिम औरतों के शरीर और स्वायत्तता पर कड़ा नियंत्रण रखना चाहते हैं, और सक्रिय रूप से लेस्बियन, गे, बाइसेक्शुअल, ट्रांसजेन्डर, क्वीयर व इंटरसेक्स (एल जी बी टी क्यू आइ) व्यक्तियों और समुदायों को अधिकारों से वंचित रखते हैं।

क्योंकि धार्मिक कट्टरवाद के संदेशे लोगों की अपनी पहचान का गहरा हिस्सा बन जाते हैं, ये मतभेद की गुंजाइश सीमित रखने में दूसरी पितृसत्तात्मक व्यवस्थाओं से ज़्यादा क़ामयाब हो पाते हैं। सवाल उठाने पर और चयन की आज़ादी पर पाबंदी होती है, लोगों की अपनी पहचान और स्वायत्तता मिटा दी जाती है, सहिष्णुता और अनेकता पर वार किया जाता है। राज्यों में सत्ता हासिल करके, या सरकारों के साथ खुले या छुपे रूप से गठबंधन करके, मीडिया पर नियंत्रण पाकर और/या नागरिक समाज पर असर डालने वाले सांस्कृतिक/वैचारिक मुहिम के ज़रिये समाजों को कट्टरवाद अपने काबू में लाता है। सभी इलाकों और धर्मों के कट्टरवादी आंदोलन ख़ास तौर पर युवाओं को निशाना बनाते हैं – उनकी ज़रूरतों और व्यक्तिपरकताओं के अनुसार आकर्षित बनकर, और शिक्षा–प्रणाली में घुसकर ताकि वे आने वाली पीढ़ियों पर अपना ठप्पा लगा सकें। कट्टरवाद अक्सर धर्म से जुड़ा होता है पर इसे धर्म का पर्याय नहीं समझना चाहिए। आर्थिक कट्टरवाद भी होता है (मसलन बाज़ार कट्टरवाद, जो किसी भी आर्थिक कार्य में राज्य के दखल के ख़िलाफ़ हो) और राजनैतिक कट्टरवाद भी (जैसे लिबर्टेरियन कट्टरवाद जैसे अति रवैये जो बाक़ी सभी नज़रियों को नकारते हैं)। (एविड, 2009)

caste जाति: साधारण शब्दों में कहें तो भारत में जाति व्यवस्था लोगों को जाति के अनुसार भिन्न–भिन्न स्तरों पर रखने की एक व्यवस्था है। इसकी जड़ें तो धर्म में हैं, पर विभाजन व्यवसाय के स्तर पर है। जाति व्यवस्था एक श्रेणीबद्धता का निर्माण करता है, जिसके परिणामस्वरूप एक जाति के लोग दूसरी जाति से ऊपर या नीचे हो जाते हैं। कौन से लोग क्या व्यवसाय करेंगे, कौन सा कार्य करेंगे, ये फिर जाति के आधार पर तय होने लगता है, और यह प्रथा जन्म से जुड़कर सामाजिक व्यवस्था का अंग बन जाती है। इससे एक व्यवस्थतित ढंग से सत्ता का बंटवारा हो जाता है। जो ऊपर होता है, वो नीचे की जाति वालों पर नियत्रण कर सकता है और सत्ता दिखाकर हिंसा भी। क्योंकि यह एक व्यवस्था के तहत होता है, इसलिए इसे सामान्य मान लिया जाता है।

भारत में जाति व्यवस्था एक तरह से समाज के विभिन्न स्तरों को दिखता है। ये शुरू हुआ पूर्व आधुनिक समय में और ब्रिटिश राज में कुछ बदलाव हुआ। जाति आज भारत में रिजर्वेशन का आधार है। ये मुख्य रूप से दो विचारों की बात करता है–वर्ण और जाति। ये एक तरह से इस व्यवस्था का विश्लेषण करने का तरीका है।

वर्ण को एक विशेष वर्ग के रूप में देखा जा सकता है जो वैदिक समाज के चार वर्गों की बात करता है इनका नाम है ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्या और शूद्र। कुछ समूह जैसे दलित को ऐतिहासिक तौर पर वर्ण व्यवस्था से बाहर रखा गया और उन्हें आज भी अछूत की तरह देखा जाता है। https://en.wikipedia.org/wiki/Caste system in India

casteism जातिवाद: एक ऐसी व्यवस्था जहां जाति से व्यक्ति की पहचान होती है, और उसके आधार पर समाज में उसका स्थान और उसकी व्यवसाय का भी निर्धारण किया जाता है। जाति की वजह से ही एक जाति के लोग दूसरी जाति के लोगों को खुद से नीचे या ऊपर देखते हैं। इस श्रेणीबद्धता से एक जाति को श्रेष्ठ माना जाता है और दूसरे को निम्न और इससे जातिवाद का जन्म होता है जिसका असर विवाह सम्बन्ध और खान–पान पर दिखता है। जाति के आधार पर लोगों के साथ अनेक तरह के भेदभाव होते हैं, छूआछूत होता है और उन्हें संसाधनों की पहुंच से भी दूर रखा जाता है। इसका प्रभाव यह होता है कि जो नीचे है, वो नीचे ही बने रहते हैं।

governance प्रशासन: प्रशासन का अर्थ है शासकीयता से जुड़ी क्षमता और गुण। सबसे व्यापक तौर पर, प्रशासन संकेत करता है लोगों के और अलग–अलग संस्थानों के बीच रिश्तों की ओर; यह जानकारी के आदान–प्रदान, निर्णय–कार्य और जवाबदेही की प्रणाली है। यह सरकार और नागरिकों के बीच हो सकती है, ग़ैर सरकारी संस्था का उन लोगों के साथ जिनके बीच वह काम करती है, या किसी संस्था का अंदरूनी प्रबंध ढांचा, और विश्व ट्रेड ऑर्गनाइजेशन जैसी अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं, राष्ट्रीय सरकारों और ज़मीनी तौर पर काम करने वाली संस्थाओं पर भी यह लागू होती है। न्याय की लड़ाई और ग़रीब व दरकिनार लोगों के लिए साम्य के संदर्भ में हर स्तर का प्रशासन प्रासंगिक है। इसके अलावा, अलग–अलग लोग समाज में अपनी सत्ता और स्थान के आधार पर प्रशासन को अपने–अपने तरीके से समझते और अनुभव करते हैं। पिछले कुछ सालों से विकास–क्षेत्र में प्रशासन एक लोकप्रिय शब्द बन गया है, जिसका ज़िक्र विश्व बैंक जैसी संस्थाएँ और अंतरराष्ट्रीय व राष्ट्रीय एन जी ओ अक्सर करती रहती हैं। सकारात्मक बदलाव की शर्त के रूप में ''सुशासन'' का उल्लेख किया जा रहा है, जो सरकारी जवाबदेही को सशक्त बनाएगा, भ्रष्टाचार और सत्ता के दुरूपयोग कम करेगा, और निर्णय–कार्य में नागरिकों की आवाज़ बुलंद करेगा। ''सुशासन'' वाली भाषा के दायरे की एक बड़ी आलोचना यह है कि वह सत्ता को कारगर बनाने पर ज़ोर देता है, ना कि उसके पुनर्वितरण पर। (न्यूमन 2004)

human rights मानव अधिकार

(**rights अधिकार; हक़ और women's human rights औरतों के मानवाधिकार** भी देखें)

human security मानव सुरक्षा: सुरक्षा–संबंधी जन–केंद्रित आग्रह, जो असुरक्षितता के असली वजहों को पहचानते हुए कई सीमायें फैलाने की कोशिश करता है – मानवाधिकारों की, मूलभूत आर्थिक न्याय की, अन्न और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच की, पर्यावरण–संबंधी विपदाओं और हानिकारक प्रभावों से बचाव की, घरेलू हिंसा और अन्य हिंसा से व्यक्तिगत आज़ादी की, और प्रजातीय व क़ौमी हिंसा से रक्षा की।

(**security सुरक्षा** भी देखें)

militarism सैन्यवाद: रोज़मर्रा की ज़िन्दगी पर और उसे आकार देने वाली सामाजिक, आर्थिक, व राजनैतिक संस्थाओं पर सैनिक बलप्रयोग के सामूहिक असर की विश्लेषण–व्याख्या करने के लिए एक व्यापक ढांचा। इस विश्लेषण के ज़रिये समाज के संगठन में एक सैनिक तर्क–पद्धति पहचान में आती है, जिसकी शुरुआत हम पाते हैं उपनिवेशवाद के हिंसात्मक दमन और अन्य बपौतियों में, जिसमें ज़ाहिर तौर पर शामिल हैं उत्तर–उपनिवेशवादी सैनिक हुकूमतें; शीत युद्ध के दौरान प्रॉक्सी यानी ऐवजी लड़ाइयाँ जिनके चलते तानाशाहों को तख़्त मिले और अस्त्रों में तीव्र वृद्धि हुई; और मौजूदा सैनिक शासन व हिंसात्मक गृह युद्ध और राजनैतिक द्वंद। इसमें संयुक्त राज्य अमरीका के सैनिक बेस या अड्डों की भूमिका और समुदायों पर उनका असर भी शामिल है, और उसी राष्ट्र की अगुआई में लड़े जा रहे आतंकवाद और ड्रग के ख़िलाफ़ उन ''युद्धों'' का प्रभाव, जिनके चलते ''राष्ट्रीय सुरक्षा'' के नाम पर संसाधनों की पूरी नदियाँ कानून प्रवर्तन और रक्षा के क्षेत्रों में उड़ेली गयी हैं। (मामा और ओकाज़ावा रे 2008)

neo-liberalism नव–उदार(ता)वाद: मुक्त बाज़ार को केंद्र में रखने वाला आर्थिक और राजनैतिक अवधारणाओं का समुच्चय, जिसके तहत सरकार के बजाय बाज़ार से जुड़ी ताक़तें अर्थव्यवस्था के ख़ास पहलू निर्धारित करती हैं, और सरकारें वैश्वीकृत बाज़ारों, बाज़ार–संबंधी प्रक्रियाओं और पूँजी के स्वार्थों के समर्थन में सक्रिय रहती हैं। पिछले तीन दशकों के दौरान नव–उदारवादी आर्थिक सुधारों ने सामाजिक–आर्थिक संस्थाओं और संस्कृति पर पूँजीवाद के असर को और व्यापक व गहरा बनाया है, जो ख़ास तौर पर उपभोक्तावाद और क्रेडिट यानी उधार–व्यवस्था के इस्तेमाल में नज़र आता है। इस कार्यसूची में शामिल हैं मुक्त व्यापार, सामाजिक कार्यक्रमों पर राजकीय खर्चे में कटौती, व्यवसाय व सुरक्षा के लिए सब्सिडी में बेहद बढ़ोतरी, व्यापार–व्यवसाय को नियंत्रण–मुक्त करना, विदेशी निवेशकों की राह से रुकावटें हटाना, दौलतमंदों और बड़ी कंपनियों पर कम टैक्स लागू करना, मज़दूर वर्ग और पर्यावरण के लिए न्यूनतम संरक्षण, ग़रीब वर्ग और क्षेत्रों के लिए सब्सिडी या समर्थन का ना होना, इत्यादि।

नव–उदारवाद के चलते ''बड़े पूँजीवादियों'' की पूँजी जमा करने और बेहद मुनाफ़ा कमाने की प्रक्रिया की रफ़्तार बढ़ी है। नतीजा यह, कि अधिक उत्पादन और चंद लोगों द्वारा अति जमाव से खड़ा होने वाला संकट तेज़ी से बढ़ता गया है और हालात बदतर होते गए हैं। इन बड़े पूँजीवादियों ने वित्त पूँजीवाद की चालों का सहारा लेकर कोशिश की है कि अधिक उत्पादन और मुनाफ़े के दर में कमी की प्रवृत्ति के कारण बार–बार होने वाले संकट से उभर निकलें, और यूँ उन्होंने एक आर्थिक अल्पतंत्र को जन्म दिया है। इन्हीं पूँजीवादियों ने लगातार मुद्रा आपूर्ति और ऋण का विस्तार बढ़ाया है, व्युत्पन्नों (डेरिवेटिव) की संख्या को आसमानी ऊंचाइयों तक ले गए हैं, और अपना मुनाफ़ा बढ़ाते रहने और अपनी परिसम्पत्तियों का अधिमूल्यन बनाये रखने के लिए एक के बाद एक आर्थिक बुलबुला तैयार किया है।

rights अधिकार: वह चीज़ जिसपर व्यक्ति का जायज़ दावा हो। अधिकार क़ानून द्वारा स्थापित हो सकते हैं, रिवाजों द्वारा परिभाषित हो सकते हैं, और/या सामाजिक मानदंड़ के तौर पर मौजूद हो सकते हैं। अधिकार कुछ हद तक सत्ता प्रदान करते हैं और इसीलिए यह तय करना एक निरंतर प्रक्रिया है कि अधिकार के रूप में किन बातों को मान्यता व संरक्षण मिलना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अधिकारों की संकल्पना व प्रतिष्ठापन असरदार ज़रिया है, लोगों की उम्मीदों और ज़रूरतों को जायज़ राजनैतिक दावों के रूप में देख पाने का, जो राज्य व अन्य कारकों को जिम्मेवार मानता है और उनसे जवाबदेही माँगता है। बहरहाल, इस वैचारिक आग्रह को व्यावहारिक मायने तब मिलते हैं जब नागरिकता की परिभाषाएँ (यानी अधिकार किसके–किसके पास हैं), निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों में राज्य की अमलदारी को, और सामाजिक, आर्थिक, नागरिक, व राजनैतिक हक़ों के अटूट रिश्तों को सम्बोधित करना ज़रूरी समझें।

(**women's human rights औरतों के मानवाधिकार** भी देखें)

security सुरक्षा: सुरक्षा की पारंपरिक समझ राज्य पर बाहरी हमलों से बचाव पर केंद्रित है, जो सरकारें सेना द्वारा प्रदान करती हैं। मगर इस ऐतिहासिक क्षण की वास्तविकताएँ सुरक्षा की और व्यापक समझ माँगती हैं, जो उन सभी खतरों पर ध्यान दे जिनका लोग सामना करते हैं, जैसे पर्यावरण के नुकसान से, हिंसात्मक द्वन्द से, मानवाधिकारों के हनन से, मूलभूत मानवीय ज़रूरतों को पूरा कर पाने में राज्यों की अक्षमता से, और ऐसी अन्य चुनौतियाँ।

(**human security मानव सुरक्षा** भी देखें)

state राज्य यह बनता है ख़ास ज़मीनी सीमाओं से बद्ध जनता, प्रणालियाँ, व सरकारी संस्थानों से। राज्य का अख्तियार और उसके फ़र्ज़, और सार्वजनिक निर्णय–कार्य, संसाधनों और अवसरों तक लोगों की पहुँच, ये सब क़ानून व नीतियों के ज़रिये परिभाषित और नियंत्रित की जाती हैं। ये नीति और नियम–क़ानून सरकार के मंत्रालय, पुलिस, न्यायालय, स्कूल, स्थानीय सरकारी प्रशासन, और अन्य संस्थान लागू करते हैं। विभिन्न राज्यों का नागरिक समाज पर, बाज़ार पर, अलग–अलग स्तर का नियंत्रण रहता है, और पारिवारिक क़ानून के ज़रिये परिवार के आतंरिक रिश्तों का नियमन किया जाता है। (वेनेक्लाज़न और मिलर 2002)

(**women's human rights औरतों के मानवाधिकार** भी देखें)
संयुक्त राष्ट्र की जनरल असेम्ब्ली द्वारा 1948 में अपनाया गया दी युनिवर्सल डेक्लरेशन ऑफ़ ह्यूमन राइट्स (मानवाधिकारों का वैश्विक घोषणा–पत्र) इस दौर में सभी लोगों के मानवाधिकारों को लेकर तैयार हुई बुनियादी सहमति का ब्यौरा पेश करता है – चाहे मुद्दा व्यक्ति की सुरक्षा का हो या ग़ुलामी, यंत्रणा, क़ानून की रक्षा, आने–जाने और बोलचाल की आज़ादी, धर्म, जमा होने, और सामाजिक सुरक्षा से जुड़े अधिकारों का, या कामकाज, स्वास्थ्य, शिक्षा, संस्कृति, और नागरिकता से संबंधित। वैश्विक घोषणा–पत्र में दर्ज ये मानवाधिकार ज़ाहिर रूप से औरतों पर लागू होते हैं। लेकिन परम्परा, पक्षपात, व सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक स्वार्थ ने मिलकर ''आम'' मानवाधिकार की परिभाषाओं से औरतों को व्यावहारिक तौर पर वंचित रखा है व मानवाधिकारों के घेरे में औरतों को कम महत्त्व दिया है और/या उन्हें ''विशेष हितसमूह'' का दर्जा देकर टाल दिया है। संयुक्त राष्ट्र के महिला

दशक (1976–1985) के दौरान, औरतों की स्थिति में सुधार के लिए विविध भौगोलिक, वर्णीय, मज़हबी, और वर्गीय पार्श्वभूमि से आने वाली औरतों ने संघटन का काम शुरू किया। संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रायोजित महिला कॉन्फरेंस 1975 में मेक्सिको शहर, 1980 में कोपनहेगन, और 1985 में नायरोबी में हुए, जहाँ औरतों की हैसियत का मूल्यांकन करने और उनकी उन्नत्ति के लिए रणनीतियाँ तैयार करने की दिशा में पहले कदम उठाये गये।

1979 में संयुक्त राष्ट्र की जनरल असेम्ब्ली ने कन्वेंशन ऑन दी एलिमिनेशन ऑफ़ ऑल फ़ोर्म्ज़ ऑफ़ डिस्क्रिमिनेशन अगेंस्ट विमेन (सीडॉ) अपनाया, जो अक्सर औरतों के अधिकारों का अंतरराष्ट्रीय बिल कहलाता है। इसमें शामिल हैं एक प्रस्तावना व 30 धाराएँ, जो औरतों के प्रति भेदभाव को परिभाषित करते हुए इसे ख़त्म करने की राष्ट्रीय स्तर की कार्यसूची प्रस्तुत करती हैं। इस ऐतिहासिक कदम के चलते, विभिन्न देशों में औरतों ने अपनी सरकारों द्वारा सीडॉ मंज़ूर करवाने के लिए काम किया, और उसे लागू करने के लिए विश्लेषी, राजनैतिक व क़ानूनी औज़ारों का विकास करना शुरू किया। 1993 के विएन्ना कॉन्फरेंस ऑन ह्यूमन राइट्स ने आख़िरकार पहचाना कि औरतों के हक़ सभी मानवाधिकारों का मौलिक और अटूट हिस्सा हैं; साथ ही अमल के लिए क़ानूनी विकल्पों की प्रक्रिया आरम्भ की गयी, जैसे सीडॉ का ऑप्शनल प्रोटोकॉल जिसके अंतर्गत सीडॉ को अमल में न लाने के लिए औरतें अपने देश को कोर्ट ले जा सकती हैं। महिला आंदोलन लगातार मानवाधिकार के ढांचों का इस्तेमाल करते आ रहे हैं ताकि सरकारें औरतों के मूल अधिकारों को पहचानें और लागू करें।

अर्थव्यवस्था

capitalism पूँजीवाद: इस अर्थनीति के तहत वस्तुओं का उत्पादन और वितरण निजी पूँजीगत माल और वेतन–मज़दूरी के बल पर मुनाफ़े के लिए किया जाता है। बहुत नारीवादियों का मानना है कि असमानता को पूरी तौर पर समझने के लिए पूँजीवाद की आलोचना ज़रूरी है, क्योंकि इसपर आधारित आर्थिक नवीनीकरण उस ख़ास विचारधारा का प्रतिबिंब है जो निजी धन–सम्पत्ति और निम्नतम खर्च के बदले निवेशकों के पूँजी–संचयन का गुण–गान करते हुए इनकी सामाजिक कीमत और इनसे बढ़ने वाले शोषण को नज़रअंदाज़ करती है।

care economy देखरेख वाली अर्थव्यवस्था: बिना वेतन की अर्थव्यवस्था, जो ''घरेलू'' या ''प्रजननीय'' क्षेत्र या ''सामाजिक पुनरुत्पत्ति'' भी कहलाती है, जिसके तहत मज़दूर वर्ग और सामाजिक ढांचे के रख–रखाव का 'ज़्यादातर काम औरतें करती हैं' – दोनों ऐसी सेवाएँ जो सरकार और तिजारती अर्थव्यवस्था के लिए अति आवश्यक हैं। देखरेख वाली अर्थव्यवस्था परिवार की उत्पत्ति व पुनरुत्पत्ति करती है और समुदाय के लिए हितकारी सामग्री व सेवाएँ मुहैया कराती है जैसे स्वास्थ्य–सेवा, बच्चों की देखभाल, शिक्षा वगैरह, जो लोगों की देखरेख की प्रक्रिया का हिस्सा हैं और अक्सर नकद अर्थव्यवस्था के बाहर पड़ जाते हैं। देखरेख वाली अर्थव्यवस्था ज़बरदस्त रूप से औरतों के परिश्रम पर टिकी होती है। क्योंकि अर्थव्यवस्था–संबंधी औपचारिक आंकड़ों में अक्सर इसकी मूल्यता का हिसाब नहीं लगाया जाता, जेन्डर से जुड़े इस क्षेत्र पर बजट व नीति के फ़ैसलों के असर का अनुमान करना मुश्किल हो जाता है। देखरेख वाली अर्थव्यवस्था में काम के अक्सर दाम नहीं मिलते, हालांकि मुमकिन है इसके लिए सरकारी रकम का सहारा हो। इसके उलट, सामाजिक कार्यक्रमों के लिए सरकारी रकम में कटौती या मूल सामाजिक सेवाओं व मूलभूत सुविधाओं के ढांचे के लिए धन–राशि की कमी देखरेख वाली अर्थव्यवस्था के अंतर्गत औरतों के अवेतन परिश्रम के बोझ को बहुत बढ़ा सकते हैं।

(**domestic work घरेलू कामकाज** भी देखें)।

commons कॉमन्ज़ / जन–संसाधन: पूँजीवाद के पूर्व की यह 18वीं सदी की अवधारणा उन संसाधनों की ओर संकेत करती है जो सार्वजनिक हैं। कॉमन्ज़ में शामिल हैं दोनों, भौतिक व अप्रत्यक्ष साधन, जैसे उद्यान, हवा और जगह, साफ़ पानी, पारम्परिक ज्ञान, जैव विविधता, और इंटरनेट – सामान्य हितों और ज़रूरतों के क्षेत्र, जिन तक समाज के हर सदस्य की पहुँच होनी चाहिए। कॉमन्ज़ अनेक व्यक्तियों की कोशिशों और योगदान का फल हैं; यानी कोई अकेली हस्ती या संस्था दावा नहीं कर सकती कि ये जन–संसाधन उसकी अपनी संपत्ति हैं (जैसे सरकार द्वारा फ़ंड होने वाला वैज्ञानिक शोध, या बौद्धिक संपदा)। पूँजीवाद की मौजूदा अवस्था में सार्वजनिक कॉमन्ज़ पर बड़े रूप से आक्रमण जारी है, ज़मीन और संसाधनों के निजीकरण के ज़रिये, जो सार्वजनिक और मूल निवासी ज़मीनों पर संसाधन निकालने–निचोड़ने वाले उद्योगों के फैलाव में हम देख सकते हैं, जैसे खनन में, और तेल व इमारती लकड़ी के उत्पादन में। सक्रियतावादी आजकल कॉमन्ज़ की ''पुनः कल्पना'' और ''पुनः प्राप्ति'' में जुटे हैं ताकि इन ज़रूरी संसाधनों तक पहुँच लोकतांत्रिक बन सके, और वर्तमान व आने वाली पीढ़ियों के लिए इन्हें सुरक्षित रखा जा सके। पर सबसे ज़्यादा वे घुसपैठ से बचे–खुचे कॉमन्ज़ के बचाव का काम कर रहे हैं।

consumerism उपभोक्तावाद: उन उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने का चलन जिनकी व्यक्ति को ज़रुरत हो या जिन्हें वह अपने जीवन और सुख–सेहत बनाये रखने के लिए ज़रूरी महसूस करे (बजाय खुद इनका निर्माण करने के, या समुदाय में सहयोगी रूप से इस्तेमाल करने के, इत्यादि)। उपभोक्तावाद जीने का एक तरीका दिखलाता है, जो खरीदी हुई वस्तुओं के आधार पर सामाजिक पहचान निर्मित करता है। नव–उदारवादी मुक्त बाज़ार वाली अर्थव्यवस्था आर्थिक विकास के लिए उपभोक्तावाद पर निर्भर है। ऋण लेने की प्रकिया को सस्ती बनाकर और मालिकों को महँगे मज़दूर मापदंडों से छुटकारा दिलाकर, जिससे उत्पाद और सस्ते हों और साथ ही नयी ज़रूरतों और इच्छाओं के निर्माण के लिए मीडिया का इस्तेमाल होता रहे, सार्वजनिक व आर्थिक नीतियाँ उपभोग को बढ़ावा देती हैं।

deregulation अविनियमन: उन सरकारी नियमों और क़ायदों का हटाया जाना या उनमें ढील दिया जाना, जैसे उपभोक्ता, मज़दूर और पर्यावरण सुरक्षा के नियम, जो बड़ी कंपनियों और अन्य आर्थिक अदाकारों के कार्य में बाधा डालते हों या उनका खर्च बढ़ाते हों, मगर जो जन–कल्याण के लिए बने हों।

(**neo-liberalism नव–उदार(ता)वाद** भी देखें)।

domestic work घरेलू कामकाज: घरेलू कामकाज यानी घर के काम में (अपने या किसी दूसरे के घर में) कई तरह की क्रियाओं, परिस्थितियों व रिश्तों के अलावा बहुत से ख़ास काम शामिल होते हैं जैसे सफ़ाई, कपड़े धोना; बाज़ार करना, खाना पकाना और पानी लाना–भरना; बीमारों, बूढ़ों और बच्चों की देखभाल करना; पालतू जानवरों की देखरेख करना; झाड़ू लगाना, बगीचा संभालना। घरेलू कामकाज में सत्ता के संबंध मूल रूप से समाये होते हैं, और यह अक्सर कम आंका जाने वाला, अवैतनिक, लगभग अदृश्य काम होता है, जो लिंग–आधारित श्रम–विभाजन के चलते प्रायः ''औरतों का काम'' माना जाता है। सभी समाजों में, जेन्डर के बूते पर घरेलू कामकाज औरतों को ही सौंपे जाते हैं; आदमी कभी–कभार हाथ बंटा भी देते हों तो भी घर के काम में आदमियों का बराबर का योगदान कम ही देखने मिलता है। जब औरतें घर से बाहर श्रम बाज़ार में काम करती हैं, आर्थिक रूप से समर्थ होने पर उनकी जगह घरेलू कामकाज करने के लिए अन्य औरतें (या बच्चे) लाये जाते हैं, वरना औरतें दोहरा काम का बोझ ढोती हैं बजाय इसके कि घर के पुरुष देखरेख का अधिक काम मोल लें। (आइ डी डबल्यू एन)

domestic worker घरेलू कामकाजी: घरेलू कामकाजी दूसरों के लिए, और उनके घरों में, बहुत तरह के (उपर्युक्त) काम करते हैं। खाना बनाना, सफ़ाई व कपड़े धोना, और बच्चों की या बड़े–बूढ़ों या असमर्थता अनुभव करने वाले व्यक्तियों की देखभाल जैसे काम। या हो सकता है वे बगीचे का काम संभालें या सुरक्षा की ज़िम्मेदारी उठायें या परिवार के मोटर चालक हों। घर के भीतर काम करने वालों में ज़्यादातर औरतें होती हैं, जो अक्सर मज़दूर कानून और सामाजिक संरक्षण के दायरे में नहीं आतीं, या तो ''डी जूरे'' यानी कानून के हिसाब से, या फिर ''डी फॅक्टो'' यानी हक़ीक़त में। (आइ एल ओ)। घरेलू मज़दूर अनेक प्रकार के रोज़गार के संबंधों के अंतर्गत काम करते हैं जिनमें अक्सर वर्ण, प्रजाति, उम्र, ग़रीबी, और आर्थिक वर्ग की अपनी भूमिका होती है: ''ज़्यादातर घरेलू मज़दूरों को आर्थिक ज़रुरत मजबूर करती है कि वे अपने घरों को छोड़कर अपने से संपन्न लोगों के घरों में काम करें। अत्यधिक घरेलू कामकाज व्यक्तियों के आपसी मंज़ूरी–इंतज़ाम से चलता है, जैसे नियुक्त व्यक्ति और परिवार के किसी सदस्य के बीच, कभी–कभी लिखित क़रारनामे के साथ लेकिन अक्सर इसके बिना। इसी वजह से घरेलू कामकाज का क्षेत्र बड़े हद तक अनियमित और अनिरीक्षित है, जिसमें औरत मज़दूर भेदभाव, मज़दूर नियमों के उल्लंघन और यौन उत्पीड़न और अत्याचार का सामना करती हैं, किसी कानूनी या सामाजिक उपाय–सहायता के बगैर। कुछ देशों में, नवीन और असरदार किस्म के संगठनों के साथ जुड़कर घरेलू मज़दूर सामूहिक रूप से इस परिस्थिति में बदलाव ला पाये हैं। (आइ डी डबल्यू एन)

economic democracy आर्थिक लोकतंत्र: ऐसी परिकल्पना जिसके अनुसार संसार के भौतिक, आर्थिक, मानवीय, और प्राकृतिक संसाधनों तक पहुँच को आकार देने वाले सिस्टम और संस्थान लोकतांत्रिक, पारदर्शी, व जवाबदेह हों। किस–किसके आर्थिक और सामाजिक हितों को बढ़ावा मिलता है और कैसे, इसे तय करने में बड़ा असर होता है सरकारों, अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संस्थानों, नागरिक समाज के अदाकारों, निजी कम्पनियों इत्यादि का, किन्तु इनके पास लोकतांत्रिक हिस्सेदारी की विधियों की कमी रहती है। ज़्यादातर लोग जानते ही नहीं कि इन हस्तियों के साथ कैसे रूबरू हों या आर्थिक नाइंसाफ़ी के लिए उन्हें किस तरह ज़िम्मेदार ठहराया जाये, और ये हस्तियाँ ऐसी कोशिशों में बाधा डालती हैं। जन–कल्याण को लेकर खुले तर्क–वितर्क के बजाय नीतियाँ आधारित होती हैं मुक्त बाज़ार व उपभोक्ता–चलित पूँजीवाद जैसे आर्थिक सोच–सिद्धांत पर। आर्थिक लोकतंत्र के अभाव में ये नीतियाँ अमीरों को धन बटोरने में मदद करते हुए औरतों को और भी दरकिनार और शोषित करती हैं, क्योंकि इनका नतीजा होता है सामाजिक सुरक्षा प्रावधानों, मानवाधिकारों और पर्यावरण–संरक्षण नियमों का हनन।

extractive industries निकालने–निचोड़ने वाले उद्योग: मिट्टी का तेल/पेट्रोलियम, कोयला, गॅस, और खनिज पदार्थ जैसे प्राकृतिक संसाधन के खनन वाले उद्योग, जिन्हें मुनाफ़े के लिए बेचा जाता है और/या अन्य बिकाऊ वस्तुओं के उत्पादन में इस्तेमाल किया जाता जैसे तेल, ज़ेवर या कम्प्यूटर चिप। अक्सर इन उद्योगों को चलाने वाली निजी कम्पनियाँ होती हैं, देशी या विदेशी, जो बेहद पूँजी जुटा तो लेती हैं पर उन समुदायों को बहुत कम लौटाती या उनमें लगाती हैं जिनके पास वे प्राकृतिक संसाधन थे। निकालने–निचोड़ने वाले उद्योग मूल निवासियों के विस्थापन के लिए, पर्यावरण के सर्वनाश के लिए, और स्थानीय मज़दूरों के शोषण लिए कुप्रसिद्ध हैं – और इन कामों में अक्सर उन्हें निजी व विदेशी निवेश के लिए लोभी स्थानीय व राष्ट्रीय सरकारों का समर्थन प्राप्त होता है।

free-market or market economies मुक्त बाज़ार या बाज़ार अर्थव्यवस्थाएँ: वे अर्थव्यवस्थाएँ जिनमें वस्तुएँ और सेवाएँ महज़ बिकाऊ इकाइयाँ (माल) बना दी जाती हैं जिनका किसी राजकीय नियंत्रण या हस्तक्षेप से ''मुक्त'' बाज़ार में खरीदी–बिकी हो सके। सैद्धांतिक तौर पर इनके दाम आपूर्ति–माँग के ज़रिये तय होते हैं, प्रतिस्पर्धा के एक ऐसे माहौल में जो कारगरता बढ़ाये। सच्चाई यह है कि सट्टेबाज़ी, एकाधिकार नियंत्रण, और बड़े उद्योगों के लिए राज्य की सब्सिडी का – या तो नकद के रूप में या उत्पादन के अनेक असली खर्च (पर्यावरण–संबंधी व सामाजिक लागत) ग्रहण करके – दामों पर गहरा असर पड़ता है। मुक्त बाज़ार के हिमायती दावा करते हैं कि बाज़ार में हर चीज़ के आदान–प्रदान से, चाहे वह कन्ज़यूमर इलेक्ट्रॉनिक हों या शिक्षा व स्वास्थ्य सेवा, आपूर्ति–माँग का नियम दामों को यूँ विनियमित करेगा कि हर व्यक्ति के पास हर उस चीज़ तक पहुँच होगी जिसकी उसे जीवन में ज़रुरत है। इस सिद्धांत का यह तर्क भी है कि बेचने वालों में आपसी प्रतिस्पर्धा के चलते वे बेहतरीन उत्पादित वस्तु बेहतरीन दामों में देंगे, जो सभी उपभोक्ताओं के लिए फ़ायदेमंद होगा। हक़ीक़त में, ''मुक्त बाज़ार'' जैसा कुछ होता नहीं; वैश्विक आर्थिक नीतियाँ, व्यापार समझौते, और राजनीति मिलकर ऐसे नियम लागू करते हैं जो जमकर बेचने वालों के हित में हों, जैसे पर्यावरण और मज़दूर मापदंडों वाली ''बाधाएँ'' हटा देना जिनके रहते उत्पादन के खर्चे बहुत बढ़ जाते। बाज़ार अर्थव्यवस्था यह भी मानकर चलती है कि सबके पास एक जैसा सामर्थ्य और अवसर होता है (बस परिश्रम चाहिए)। लेकिन वेतन में भेदभाव, वर्णभेद, जातिवाद और अच्छी शिक्षा तक असमान पहुँच इस दावे को झुठलाते हैं।

(**solidarity economy एकजुटता वाली अर्थव्यवस्था भी देखें**)

free trade मुक्त व्यापार: व्यापर को लेकर नव–उदारवादी, मुक्त बाज़ार वाले सिद्धांतों पर आधारित राज्यों और उपराज्यों के अदाकारों के बीच क़रारनामे और रिश्ते। मुक्त व्यापार के क़रारनामों में, ख़ासकर उनमें जिनका संयुक्त राज्य अमरीकी सरकार प्रचार करती है, हस्ताक्षर करने वाले राज्य से अपेक्षा रहती है कि व्यापार की राह की ''बाधाएँ'' हटाई जायेंगी, जैसे मज़दूरी मापदंड, आयातित वस्तुओं पर प्रशुल्क, और आवश्यक क्षेत्रों को सहायता। यह पूर्वानुमान कि वस्तुओं–सेवाओं का वैश्विक आदान–प्रदान ज़्यादा कारगर होगा, मसलन खाद्य उत्पादन आख़िरकार सबसे सस्ती जगह में किया जाएगा, जो सबके लिए फ़ायदेमंद होगा। इस मॉडल में अन्य सामाजिक मूल्यों के लिए जगह नहीं, जैसे रोज़गार–जनक योजनाएँ, सामाजिक समता, वहनीयता, और राष्ट्रीय प्रभुता/स्वायत्तता।

globalization वैश्वीकरण एक बड़ा ही विवादित शब्द है। तकनीकी प्रक्रिया के तौर पर वैश्वीकरण की एक समझ हो सकती है आसानी और रफ़्तार, जिनके सहारे लोग, व्यापार, संस्कृति, मीडिया और विचारधाराएँ राजनैतिक और भौगोलिक सीमाएँ पार कर चली जा रही हैं। यह संभव हुआ विविध टेक्नॉलजियों तक पहुँच के कारण, जिनमें इंटरनेट संचार टेक्नॉलजी की ख़ास भूमिका है। लेकिन राजनैतिक प्रकिया के तौर पर वैश्वीकरण उन तरीकों की ओर संकेत करता है जिनमें भिन्न राज्यों व बहुदेशी अदाकारों (जैसे बड़ी कम्पनियों) ने इन नयी टेक्नॉलजियों का इस्तेमाल नव–उदारवादी सिद्धांतों के आधार पर राजनैतिक व आर्थिक व्यवस्थाओं के नवीनीकरण के लिए किया है, व्यापार की बाधाओं को हटाकर अपना प्रभाव और पहुँच बढ़ाने ले लिए। आलोचकों की राय में वैश्वीकरण विश्व के विकास का ऐसा वर्तमान मॉडल है जो वितरण व प्राकृतिक संसाधनों को कंपनियों के पक्ष में और उनका मुनाफ़ा बढ़ाने के लिए इस्तेमाल करता है, जिसमें उत्तरी विश्व की बड़ी भूमिका है और दक्षिणी विश्व के विशिष्ट यानी एलीट वर्गों का सहयोग। उत्पादन के वैश्वीकरण के अंतर्गत मुक्त व्यापार के क़रारनामे राष्ट्रों पर थोपे गए हैं जो उन्हें निवेश के लिए स्पर्धा में उतरने को मजबूर करते है, जिसका अर्थ है कि अब वे लगातार लोभ दे रहे हैं – और भी सस्ती मज़दूरी का, राज्य द्वारा लाभों का, प्राकृतिक संसाधनों तक पहुँच का, जो बहुदेशी कंपनियों की लाभ–सीमाएँ बढ़ाने की प्रक्रिया में मज़दूर और पर्यावरण नियम–नियंत्रणों को जर्जर करती जाएँ। (केर और स्वीटमन 2003)

informal economy अनौपचारिक अर्थव्यवस्था: एक नहीं, अनेक अर्थव्यवस्थाएँ या अर्थव्यवस्था के हिस्से, जिनमें वस्तुओं–सेवाओं की बिक्री–खरीदी औपचारिक बाज़ारों के बाहर की जाती है, बिना राजकीय नियंत्रण या कर–व्यवस्था के, और कभी–कभी ग़ैर–मुद्रा सौदों से। अनौपचारिक अर्थव्यवस्थाएँ और इनसे जुड़े लोग अक्सर आर्थिक विकास और मज़दूरी के ''सरकारी'' आंकड़ों में अदृश्य होते हैं। अनौपचारिक क्षेत्र लोगों के लिए आमदनी के अवसर निर्माण करता है, जैसे खाने की चीज़ें बेचकर, बच्चों की देखभाल करके, या औपचारिक क्षेत्र में नौकरियों की कमी के वक़्त मज़दूरी दिलाना। क्योंकि अनौपचारिक क्षेत्र लगभग सरकारी निगरानी–नियंत्रण के बग़ैर चलता है, मज़दूरों को इसमें मज़दूर क़ानून के तहत लाभ या सुरक्षा नहीं मिलती। भागीदार अपने बचाव के लिए खुद अपने नियम बनाकर उन्हें लागू कर सकते हैं। इसके विपरीत, अनौपचारिक अर्थव्यवस्थाएँ बेहद शोषक और हिंसात्मक हो सकती हैं, विशेष रूप से जहाँ आदान–प्रदान की जा रही वस्तु, या सेवाएँ, प्रतिबंधित या ग़ैर–कानूनी हों, जैसे हथियार या अवैध ड्रग। क्योंकि भेदभाव की वजह से औपचारिक मज़दूर बाज़ार में औरतों के प्रवेश में रुकावटें आती हैं, बहुत से देशों में अनौपचारिक अर्थव्यवस्था औरतों की मज़दूरी का केंद्र बन जाती है; मज़दूर हक़ों को टाल जाने वाली नव–उदारवादी नीतियों के कारण अनेक विकासशील देशों में अनौपचारिक अर्थव्यवस्था सबसे ज़्यादा तेज़ी से बढ़ने वाला आर्थिक क्षेत्र है। दुनिया के बहुत सारे विकासशील देशों में अनौपचारिक क्षेत्र में औरतों की असंगत संख्या पाई जाती है।

informal labour अनौपचारिक मज़दूरी/काम: अनौपचारिक मज़दूरी में काम और कमाई कुछ हद तक या पूरी तरह उस औपचारिक रोज़गार व्यवस्था से बाहर होते हैं जो राज्य निरीक्षित करता है और जिसपर कर लागू होते हैं।

international financial institutions (IFIs) अंतरराष्ट्रीय वित्त संस्थान (आइ एफ़ आइ): ये संस्थान उन देशों को उधार देते हैं जो नकद की तंगी महसूस कर रहे हों, ताकि फ़ंडिंग की कमियाँ पूरी हो सकें या फिर सड़क निर्माण, सफ़ाई व्यवस्था में सुधार, या शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा जैसी विकास परियोजनाओं के लिए पैसे उपलब्ध हों। हालांकि ये ''अंतरराष्ट्रीय'' संस्थान हैं, इनकी उधार योजनाओं की बागडोर उन्हीं अमीर पश्चिमी देशों और निजी कंपनियों के हाथ में होती है जिनका कम–आय देशों को इस शर्त पर बड़ी रकम उधार देने का लम्बा इतिहास है कि वे नव–उदारवाद का समर्थन करने वाले आर्थिक सुधार लागू करें। ख़ासकर 1970 के दशक से, आइ एफ़ आइ ऐसी काफ़ी बड़ी–बड़ी रकम उधार दे चुके हैं जिसका इस्तेमाल हुआ है तानाशाहों को बनाये रखने, छोटे अस्त्र खरीदने, और ऋणों के भुगतान, या तेल/पेट्रोलियम के कृत्रिम रूप से ऊँचे दाम दे पाने के लिए। अनेक कम–आय देश अन्य कर्ज़ों के अलावा आज तक ''नाजायज़ ऋण'' के इन पहाड़ों को ढो रहे हैं, जिनका संचालन करते हुए आइ एफ़ आइ नव–उदारवाद की शर्तें थोपते हैं। (जूबिली यू एस नेटवर्क)

livelihood जीविका: किसी व्यक्ति या समुदाय की जीविका का मतलब उस लाभदायक कार्य से है जो लोगों को जीवित रखता है, और जो उनके और उनके परिवारों का भरण–पोषण करता है।

market बाज़ार: वह क्षेत्र जहाँ वस्तुओं और सेवाओं का क्रय–विक्रय होता है और जहाँ कारोबार, उद्योग, व्यापार और उपभोग पनपते हैं।

privatization निजीकरण: जब राज्य या कोई अन्य सामूहिक हस्ती वस्तुएँ या सेवाएँ निजी क्षेत्र को बेच दे। यह संक्षेप है नीतियों और प्रक्रियाओं के एक पूरे जाल के लिए, और नव–उदारवाद विचारधारा का यह एक मूल अंश है जिसके तहत सार्वजनिक संसाधनों और अहम सेवाओं के वितरण की ज़िम्मेदारी सरकार से हटाकर निजी क्षेत्र को सौंप दी जाती है (लाभ–इच्छुक और लाभ–निरपेक्ष हस्तियों को)। निजीकरण आधारित होता है बाज़ार के मॉडल पर, और अक्सर इसका तब

प्रस्ताव रखा जाता है जब सरकार के कार्यक्रम ठीक या कारगर ढंग से काम नहीं कर रहे हों। माना जाता है कि बाज़ार की ताक़तें उपभोक्ताओं के लिए विकल्प पेश करेंगी और स्वस्थ प्रतियोगिता को बढ़ावा देंगी, और यूँ सेवाओं को बेहतर बनाने के काम को प्रोत्साहन मिलेगा। निजीकरण व्यक्तिवादी और मुकाबले से जुड़े मूल्यों को बढ़ावा देता है, और आर्थिक लाभ पर विशेष ध्यान देता है। यह आपसी ज़िम्मेदारी या सामुदायिक एकजुटता जैसी धारणाओं के विपरीत है, और इसके चलते सेवाओं को सार्वजनिक अधिकार या जनहित के रूप में देखने–समझने को अहमियत नहीं दी जाती। (रायली और मार्फ़टिया 2006)

reproductive tax प्रजनन टॅक्स अर्थव्यवस्था में औरतों पर लगने वाले जुर्मानों की, और आदमियों के साथ होने वाले पक्षपात की व्याख्या करने के लिए नारीवादी अर्थशास्त्री डायन एल्सन ने इस उक्ति की रचना की। मज़दूरी बाज़ार या मज़दूर वर्ग में भागीदारी की गणना में औरतों के अवैतनिक काम – जैसे घरेलू काम और बच्चों की देखभाल – को नहीं गिना जाता; माँ होने पर यह जुर्माना ही कहलाएगा।

social protection सामाजिक सुरक्षा: जोखिम का सामना कर रहे कमज़ोर–असुरक्षित वर्गों के लिए सामाजिक सहायता कार्यक्रम और सामाजिक सुरक्षा जाल, सामाजिक बीमा और सक्रिय मज़दूर बाज़ार तैयार करने वाली नीतियों का समूह, यानी एक ऐसी पहल जो इन वर्गों की मूल ज़रूरतें पूरी करने का आश्वासन दे। जो असुरक्षित लोगों को रोज़गार में अनिश्चितता से सुरक्षित रखे, और दरकिनार लोगों के सामाजिक ओहदे व अधिकारों को आगे बढ़ाने का काम करे। रूपांतर लाने वाली सामाजिक सुरक्षा यह सब करने के साथ–साथ इस बात पर भी ज़ोर देती है कि अच्छे स्तर के जीवन और सुरक्षा बनाये रखने के के लिए जिन संसाधनों तक पहुँच ज़रूरी है वह सभी इन्सानों को अधिकार के तौर पर मिले। (आइ डी एस 2009)

solidarity economy एकजुटता वाली अर्थव्यवस्था: यह बाज़ार अर्थव्यवस्था का विकल्प या फिर पूरक़–सहयोगी है, जिसके तहत आर्थिक व्यवसाय मुनाफ़े के लिए नहीं बल्कि सामूहिक फ़ायदे के लिए शुरू किये जाते हैं। बहुत बार, औरतों ने एकजुट होकर ज़रुरत की छोटी–मोटी वस्तुओं का उत्पादन किया है या लघु उद्योग चलाये हैं जैसे दुकानें, बाग़–बगीचे, मुहल्ले के लिए रसोई, बच्चों के देखभाल–केंद्र, और सहकारी आर्थिक इकाईयाँ। एकजुटता वाली अर्थव्यवस्था संघटित करने के साथ साझी निर्णय–प्रक्रिया को बढ़ावा देती है, और मूल आर्थिक व सामाजिक अधिकार हासिल कर पाने में औरतों के लिए मददगार हो सकती है। इसके अलावा, देखरेख वाली अर्थव्यवस्था में यह औरतों के अवैतनिक मज़दूरी के भार को कम करने में सहायक बन सकती है।

संदर्भ

AGENDE (Brazil), Centro de la Mujer Peruana Flora Tristan (Peru) and Equidad de Genero (Mexico). Training. (2006) "Course on Feminist Advocacy". *Strengthening Advocacy Skills of Latin American NGOs that work on Reproductive and Sexual Rights*. Brazil, 2001. Cited in VeneKlasen and Miller, A New Weave of Power.

Alvarez, **Sonia**. (2008) "*The NGO-ization of Women's Movements and its Implications for Feminist Organizing*", workshop at the AWID International Forum on The Power of Movements, 14–17 November 2008, Cape Town.

Association for Women's Rights in Development (AWID). (2009) New Insights on Religious Fundamentalisms, Research Highlights. Toronto, Mexico City, and Cape Town: AWID.

Batliwala, Srilatha. (2008) "Introduction." *Changing their world: Concepts and practices of women's movements*. Ed. Srilatha Batliwala. Toronto, Mexico City, and Cape Town: Association for Women's Rights in Development (AWID).

————————. (1994) *The Meaning of Women's Empowerment: New Concepts from Action*. In Population Policies Reconsidered: Health, empowerment, and rights. Boston: Harvard University Press.

————————. (2011a) *Feminist Leadership for Social Transformation: Clearing the Conceptual Cloud*. New Delhi: CREA.

————————. (2011b) "Unpacking social exclusion: a primer for marginalized women." *Count Me In! Conference Papers, Kathmandu*, 16–18 April 2011. New Delhi: CREA. 17-36.

————————. 1993. *Women's Empowerment in South Asia – Concepts and Practices, Asia Pacific Bureau of Adult Education's (ASPBAE) study on FAO's Freedom from Hunger campaign*. In VeneKlasen and Miller, "Basic Concepts of Power," A New Weave of Power, People and Politics. 41. Print.

Bunch, Charlotte and Samantha Frost. (2000) Women's Human Rights: An Introduction. *Routledge International Encyclopedia of Women: Global Women's Issues and Knowledge*. Routledge.

CREA. (2006) Sexual Rights and Social Movements. CREA: New Delhi.

Facio, Alda. (2011) *Age Matters*. Discussion paper prepared for JASS (Just Associates).

Facio, Alda and Martha I. Morgan. n.d. *Equity or Equality for Women? Comparative Constitutional and International Human Rights Law Perspectives*. Lecture, Women, Gender and Justice Program at the United Nations Latin American Institute for Crime Prevention (ILANUD). Costa Rica. Unpublished.

Gaventa, John. (1997) "Citizen Knowledge, Citizen Competence, and Democracy Building." *The Good Society*, 5:3 (1997).

Goodman, Diane and Stephen Schapiro. (1997) "Sexism Curriculum Design. *Teaching for Diversity and Social Justice, A Sourcebook*. Ed. Maurianne Adams, Lee Anne Bell, and Pat Griffin. New York: Routledge, 110-140. Print.

Governance and Social Development Resource Centre (GSDRC). *Social Exclusion as a Process*. Web page. UK: University of Birmingham. Accessed 23 March 2011.

Griffin, Pat and Bobbie Harro. (1997) "Heterosexism Curriculum Design." *Teaching for Diversity and Social Justice, A Sourcebook*. Ed. Maurianne Adams, Lee Anne Bell, and Pat Griffin. New York: Routledge. 141-169. Print.

Institute for Development Studies (IDS). (2009) "Social Protection Responses to the Financial Crisis: What do we know?" *IDS In Focus Policy Briefing 7.4*. UK: IDS.

International Domestic Workers Network (IDWN). (2011) "What is Domestic Work?" *Respect and Rights for Domestic Workers*. Online posting. Switzerland: IDWN, n.d.

(Web). Accessed 27 December 2011.

International Labour Organization (ILO). (2011) *Domestic Workers*. Online posting. Geneva: ILO, n.d. (Web). Accessed 27 December 2011.

JASS (Just Associates). (2008) *Feminist Epistemology*. Unpublished.

————————. (2009) Imagining and Rebuilding Feminist Movements for the Future. Internal strategy document. Washington, DC: JASS (Just Associates).

Jubilee USA Network. *Beginners' Guide to Debt*. Online posting. USA: Jubilee USA, n.d. (Web). Accessed 27 December 2011.

Kerr, Joanna and Carolyn Sweetman. (2003) "Editorial: Women Reinventing Globalisation." *Gender and Development* 11.1 (May 2003): 3-12.

Khan, Alia. (2011) *Gender-based Violence and HIV: A Program Guide*. Washington, DC: USAID's AIDS Support and Technical Assistance Resources (AIDSTAR-One).

Mama, Akina and Margo Okawaza-Ry. (2008). "Editorial: Militarism, Conflict, and Women's Activism." *Feminist Africa* 10 (August 2008): 1-7.

Moreno, Claudia. (2005) *WHO Multi-country Study on Women's Health and Domestic Violence Against Women: Initial Results on Prevalence, Health Outcomes and Women's Responses*. Geneva, Switzerland: World Health Organization.

Miller, Valerie, Lisa VeneKlasen, Molly Reilly, and Cindy Clark. (2006) *Making Change Happen: Power. Concepts for Revisioning Power for Justice, Equality, and Peace*. Washington, DC: JASS (Just Associates).

Molyneaux, Maxine. (1997) Gender, Citizenship and Democracy: Reflections on contemporary debates, Institute de la Mujer. In VeneKlasen and Miller, *A New Weave of Power, People and Politics*, 2002.

Mukhopadhyay, Maitrayee. (2004) "Introduction." *Gender, Citizenship, and Governance. A Global Sourcebook*. Ed. Minke Valk, Sarah Cummings, and Henk van Dam. The Netherlands: KIT (Royal Tropical Institute) and Oxfam Publishing. 13–28. Print.

Newman, Kate. (2004) *Reflect, Rights and Governance: Insights from Nigeria and South Africa*. UK: Action Aid International.

Rauscher, Laura and Mary McClintock. (1997) "Abelism Curriculum Design." *Teaching for Diversity and Social Justice, A Sourcebook*. Ed. Maurianne Adams, Lee Anne Bell, and Pat Griffin. New York: Routledge. 198–229. Print.

Reilly, Molly and Akanksha Marphatia. (2006) *Forging a Global Movement: New Education Rights Strategies for the United States and the World*. Washington, DC: Action Aid USA and JASS (Just Associates).

Suarez Toro, Maria and Valerie Miller. (Forthcoming) "Resonance and the Butterfly Effect: Feminist Epistemology and Popular Education." *Asking, We Walk: South as New Political Imaginary*. Ed. Corrine Kumar. Bangalore: Streelekha Publishers.

VeneKlasen, Lisa and Valerie Miller. (2002) *A New Weave of Power, People and Politics*. Washington, DC: World Neighbors.

VeneKlasen, Lisa. (2006) Popular Education Revisited. Washington, DC: JASS (Just Associates).

Wijeyesinghe, Charmaine L., Pat Griffin, and Barbara Love. (1997) "Racism Curriculum Design." *Teaching for Diversity and Social Justice, A Sourcebook*. Ed. Maurianne Adams, Lee Anne Bell, and Pat Griffin. New York: Routledge. 82–109. Print.

Women, Law, and Development International and Human Rights Watch Women's Rights Project. Women's Human Rights Step by Step, 1997.

Yeskel, Felice and Betsy Leondar-Wright. (1997) "Classism Curriculum Design." *Teaching for Diversity and Social Justice*, A Sourcebook. Ed. Maurianne Adams, Lee Anne Bell, and Pat Griffin. New York: Routledge. 231–260. Print.

JASS
info@justassociates.org
www.justassociates.org